

जैनसाहित्यसंशोधकग्रन्थमाला

आचाराङ्ग-सूत्रम्

मूलपाठ-विशिष्ट पाठभेद-शब्दकोष-समन्वितम्

(प्रथमः श्रुतस्कन्धः)

जैन साहित्य संशोधक समिति

पूना शहर, (दक्षिण)



JAINA-SAHITYA-SAMSODHAKA-GRANTHAMALA

ĀCHĀRĀNG-SŪTRAM

[FIRST SRUTASKANDHA.]

Text in Devanagari with various readings and a glossary

Based upon the German edition of Dr Walter Schubring, Leipzig.

Published by

THE JAINA SAHITYA SAMSODHAKA SAMITI.

Poona City (India)

Mahavira Samvat 2450]

1924

[Vikrama Samvat 1980.

पुण्य-स्मरण अने धन्यवाद

-->> <<--

श्री धन्य प्रकाशित करवा मार, प्रमदारागः निमासा स्वर्गस्थ मठ नालिडाम
सद्दीचंदनी धन्यपत्नी आनिहा मरुशरण, पाताना पताना पुण्यस्मरणार्थे
जे दुसरे यदायदा बाणे ते ने वदले तमने धन्यवाद पर उ

आचाराङ्ग-सूत्र

जैन साहित्यसंशोधक प्रथममाला

आचाराङ्ग-सूत्रम्

मूलपाठ-विशिष्ट पाठभेद-शब्दकोष-समन्वितम्

(प्रथमः श्रुतस्कन्धः)



जर्मनराष्ट्रनिवासि-डॉक्टर-इत्युपाधिधारि-वाल्टर शुब्रिग-नामधेयेन विद्वद्वरेण
संशोधितं, जर्मन-देशान्तर्गत-लाइपज़िग-नगर संस्थित-
प्राच्यविद्या-गवेषक समितिद्वारा रोमनलिप्या
प्रकटीभूतं च पुस्तकमनुसृत्य

भारतवर्षान्तर्गत-

पुण्यपत्तन-संस्थापित

जैन साहित्य संशोधक समिति

नामकसंस्थायाः सञ्चालकेन देवनागराक्षरैः प्रकटी कृतम्

प्रकाशक — मुनि तिलकविजय, भारत जैन विद्यालय, पूना शहर.

मुद्रक — लक्ष्मण भाऊराव कोकाटे, इनुमान प्रेस, २०० सदाशिव पेठ, पूना शहर.

॥ आचारंग-सुत्तं ॥

॥ 'बम्भचोराइं' नाम पढमो सुयक्खन्धो ॥

स त्थ प रि ज्ञा

१-१

(१) सुय मे, आउत्त, तेण भगवया एवमक्खाय. —

इहमेगेसिं नो सत्ता भवइ, (२) त-जहा 'पुरथिमाओ वा दिमाओ आगओ अहमसि, दाहिणा-
ओ वा दिसाओ . . , पच्चथिमाओ वा दिमाओ , उतराओ वा दिसाओ . . , उट्ठाओ वा
दिसाओ ... , अहेदिमाओ वा . . , अन्नयरीओ वा दिसाओ वा अणुदिमाओ वा आगओ
अहमसि'—एवमेगेसिं नो नाय भवइ. (३) 'अथि मे आया उववाइण, नत्थि मे आया उववा-
इए ? के अह आसी के वा इओ चुओ इह पेच्चा भविस्सामि ?' । (४) से
उज पुण जाणेउज्जा सह मम्मुइयाए पर-वागरणेण अत्तेमिं वा अन्तिए सोच्चा,
त-जहा .— ' पुरथिमाओ वा दिमाओ आगओ अहमसि जाव अन्नयरीओ वा दिसाओ
वा अणुदिमाओ वा आगओ अहमसि '—एवमेगेसिं नाय भवइ .— ' अथि मे आया उव-
वाइण; जो इमाओ दिसाओ अणुदिमाओ वा अणुमचरइ, सव्वाओ दिमाओ सव्वाओ अणु 10
दिमाओ सोइह ' ।

(५) से आया-वाई लोगा-वाई कम्मा-वाई किरिया-वाई य ।

करिस्स च'ह कारावेस्स च'ह करओ यावि समणुत्ते भविस्सामि'—एयावन्ती सन्वावन्ती लोगसि
हम्म-समारम्भा परिजाणियन्वा भवन्ति । (६) अपरिज्ञाय कम्मे खलु अय पुरिसं, जो इमाओ
देसाओ वा अणुदिमाओ वा अणुमचरइ, सव्वाओ दिमाओ सव्वाओ अणुदिमाओ सहइ, 15
प्रणेग-रूवाओ जोणीओ मन्धेइ, विरूव-रूवे फामे पडिसवेएइ । (७) तत्थ खलु भगवया
रिज्ञा पवेइया इमस्स चे'व जीवियस्स परिवन्दण-माणण-पूयणाए, जाइ-मरण-मोयणाए
दुक्ख-पडिधाय-हेउ—एयावन्ती सन्वावन्ती लोगसि कम्मसमारम्भा-परिजाणियन्वा भवन्ति ।
अस्से'ए लोगसि कम्म-समारम्भा परिज्ञाया भवन्ति, से हु सुणी परिज्ञाय-कम्मे—ति वेमि ॥

१-२

(१) अट्टे लोए परिजुण्णे दुस्संबोहे अविज्ञाणए ।

अस्सि लोए पव्वहिए

तत्थ-तत्थ पुढो पास आउरा परियावोन्ति ।

(२) सन्ति पाणा पुढो-सिया ।

लज्जमाणा पुढो पास ।

“ अणगारा मो ” ति एगे पवयमाणा ।

जमिण विरूव-रूवेहिं सत्थेहिं पुढवि-कम्मसमारम्भेण पुढवि-सत्थ समारम्भमाणे अन्ने ५ व' णेगरूवे पाणे विहिंसइ—(३) तत्थ खलु भगवया परिन्ना पवइया इमस्स चे'व जीवि-स्स परिवन्दण-माणण-पूयणाए, जाइ मरण-मोयणाए दुक्ख-पडिघाय-हेउ — से सयमेव पुढवि-सत्थ समारम्भइ अन्नेहिं वा पुढवि-सत्थ समारम्भावेइ अन्ने वा पुढवि-सत्थ समार-म्भन्ते समणुजाणइ; (४) त से अहियाए, त से अबोहीए । से च सबुज्जमाणे आयाणीय, समुट्टाए — सोच्चा खलु भगवओ अणगाराण वा अन्तिए इहमेगेसिं नाय भवइ . एस खलु 10 गन्थे, एस खलु मोहे, एस खलु मारे, एस खलु नरए ।

इच्चत्थ गढिए लोए ।

जमिण विरूव-रूवेहिं सत्थेहिं पुढवि-कम्मसमारम्भेण पुढवि-सत्थं समारम्भमाणे अन्ने वणे'ग-रूवे पाणे विहिंसइ—

(१) से बेमि अप्पेगे अच्चमब्भे, अप्पेगे अच्चमच्छे; अप्पेगे पायमब्भे, अप्पेगे पायमच्छे; . . 15 गुप्फ .. जघ... जाणु.. ऊरु कडि... नामि .. उयर . पास पिट्ठिं .. उर . हियय. . . थण.. खन्ध.... बाहु.. इत्थ.. अगुलिं. . नह . गीव. . हणु... होट्टु.. दन्त... जिब्भ... तालु गलं.... गण्ड.... कण्ण... नास.... अच्छि.... भमुह . निलाड . सीस....; अप्पेगे सपमारए अप्पेगे उह्वए ।

(६) एत्थ सत्थं समारम्भमाणस्स इच्चेए आरम्भा अपरिन्नाया भवन्ति, एत्थ सत्थं 20 समारम्भमाणस्स इच्चेए आरम्भा परिन्नाया भवन्ति । त परिन्नाय मेहावी नेव सय पुढवि-सत्थं समारम्भेज्जा नेव'न्नेहिं पुढवि-सत्थं समारम्भावेज्जा नेव'न्ने पुढवि-सत्थं समारम्भन्ते समणुजाणेज्जा । जस्से'ए पुढवि-कम्म-समारम्भा परिन्नाया भवन्ति, से हु मुणी परिन्नाय-कम्मे — ति बेमि ॥

१-३

(१) से बेमि . से जहा वि—

अणगारं उज्जुकडे नियाग-पडिवन्ने अमाय कुब्बमाणे वियाहिए ।

25 (२) जाए सद्धाएँ निक्खन्तो, तमेव अणुपालिया;
वियहित्तु विसोत्थिय

पणया वीरा महा-वीहिं

लोगं च आणए अभिसमेच्चा अकुओभय ।

(३) से बेमि—ने'च सय लोग अब्भाइक्खेज्जा, नेव अत्ताण अब्भाइक्खेज्जा । जे लोग 30 अब्भाइक्खइ, से अत्ताण अब्भाइक्खइ, जे अत्ताण अब्भाइक्खइ, से लोग अब्भाइक्खइ ।

(४-६) 'लज्जमाणा....(यथा प० २-१३. नवर पुढवि त्याने उदय भणनीय). .

विहिंसइ—

(७) से बेमि : सन्ति पाणा उदय-निस्तिया जीवा अणेगा ।
इह च खलु मो अणगाराण उदय जीवा वियाहिया ।
सत्थ चेत्थ अणुवीइ, पास पुढो सत्थ पवेइय :

अदु वा अइत्ता'याण .

“ कप्पइ णे कप्पइ णे पाउ”,

5

अदु वा विभूसाए पुढो सत्थेहिं विउट्टन्ति । एत्थ वि तेसिं नो निकरणाए ।

(८) एत्थ सत्थ .. (यथा २, १९-२२. नवर पुढवि स्थाने उदय अणनीय)...परिज्ञाय-

कम्मे—त्ति बेमि ॥

१-४

(१-२) से बेमि ने'व सय... (यथा २, २९-३०)... लोगं अब्भाइक्खइ । जे दीहलोग-सत्थस्स खेयन्ते, से असत्थस्स खेयन्ते; जे असत्थस्स खेयन्ते, से दीहलोग-सत्थस्स खेयन्ते । 10

(३) वीरेहिं एय अभिमूय दिट्ठ

सजएहिं सया जएहिं सया अप्पमतोहिं .

जे पमत्ते गुणट्ठिए, से हु दण्डे पवुच्चइ ;

तं परिज्ञाय मेहावी “ इयाणि नो,

जमह पुव्वमकासी पमाएण ” ।

15

(४-५) ' लज्जमाणा .. (यथा २, २-१३ नवर पुढवि स्थाने अगणि अणनीय)....

विहिंसइ—

(६) से बेमि : सन्ति पाणा पुढवि-निस्तिया तण-निस्तिया पत्तनिस्तिया कट्ठ-निस्तिया गोमय-निस्तिया कयवर-निम्मिया, 'सन्ति सपाइमा पाणा, आइच्च सपयन्ति य'। अगणिं च खलु पुढा एगे सघायमावज्जन्ति; जे तत्थ सघायमावज्जन्ति, ते तत्थपरियाविज्जन्ति; जे तत्थ परि- 20 याविज्जन्ति, ते तत्थ उद्दायन्ति ।

(७) एत्थ सत्थ (यथा २, १९-२२. नवर पुढवि स्थाने अगणि अणनीय) परिज्ञाय-कम्मे—त्ति बेमि ॥

१-५

(१) “त नो करिस्तामि समुडाए

मत्ता मइम अभय विइत्ता ।

25

न जे नो करए, एसोवरए; एत्थोवरए एस अणगारे ति पवुच्चइ ।

(२) जे गुणे से आवड्ठे, जे आवट्टे से गुणे उट्ठ अह तिरिय पार्इण पासमाणे रूवाइ पासइ, सुणमाणे सद्दाइ सुणइ; (३) उट्ठ अह तिरिय पार्इण मुच्छमाणे रूवेमु मुच्छइ सद्देमु यावि ।

एत्थ अणुत्ते अणाणाए । एस लोए वियाहिए

पुणो-पुणो गुणासाए वक्क-समायारे पमत्ते गारमावसे ।

(४-५) ' लज्जमाणा .. (यथा २, २-१३ नवर पुढवि स्थाने अणनीय)...विहिंसइ— 30

(६) से बेमि . इमं पि जाइ धम्मय, एय पि जाइ-धम्मय, इमं पि बुद्धि-धम्मयं, एय पि बुद्धि-धम्मय; .. चित्तमन्तय.. छिन्न मिलाइ....आहारगं....अनिच्चय....असावयं.... चयावचइय.. .विपरिणाम-धम्मय ।

(७) एथ सत्थ... (यथा २, १९-२२ नवरं पुढवि स्थाने घणस्सइ भणनीय)

४ परिन्नाय-कम्मे—त्ति बेमि ॥

१-६

(१) से बेमि : सन्ति'मे तसा पाणा, त-जहा:-अण्डया पोयया जराउया रसया संसेयया सम्मुच्छिमा उब्भिया उववाइया ।

एस ससारे ति पवुच्चइ

(२) मन्दस्स अत्रिजाणओ ।

10

निज्जाइता पडिलेहिता पतेय परिणिन्वाण

सव्वेसिं पाणाणं, सव्वेसिं भूयाण, सव्वेसिं जीवाण, सव्वेसिं सत्ताण असाय अपरिणिन्वाणं । महब्भय दुक्ख ति बेमि ।

तसन्ति पाणा पदिमो दिसासु य ।

‘ तथ-सत्थ पुढो पाम आउरा परियावेन्ति । (३) सन्ति पाणा पुढो-सिया ।

15

(४) ‘ लज्जमाणा (यथा २, २-१३ नवरं पुढवि स्थाने तस्सकाय भणनीय)

विहिंसइ—

(५) से बेमि अप्पेगे अच्चाए हणन्ति, अप्पेगे अजिणाए वहन्ति,....मसाए....सोणि-याए...., एव हिययाए पित्ताए वसाए पिच्छाए पुच्छाए वालाए सिंगाए विसाणाए दन्ताए दाढाए नहाए प्फारुणीए अट्टीए अट्टिभिंजाए—अट्टाए अणट्टाए; अप्पेगे ‘हिंसिसु मे’ ति वा वहन्ति, अप्पेगे ‘ हिंसन्ति मे ’ ति वा वहन्ति, अप्पेगे ‘ हिंसिम्मन्ति मे ’ ति वा वहन्ति ।

20

(६) एथ स थ... (यथा २, १९-२१ नवरं पुढवि स्थाने तस्सकाय भणनीय) . परिन्नाय-

कम्मे—त्ति बेमि ॥

१-७

(१) प्हू य एजस्स दुगुञ्जणाए ।

आयक दसी ‘ अहिय ’ ति नच्चा ।

25

जे अज्झत्थं जाणइ, से बहिया जाणइ; जे बहिया जाणइ, से अज्झत्थ जाणइ : एय तुळ अब्बेसिं ।

इइ सन्ति-भाया दविया नावकस्सन्ति जीविउं ।

(२-३) ‘ लज्जमाणा... (यथा २, २-१३ नवरं पुढवि स्थाने वाउ भणनीय)विहिंसइ—

(४) से बेमि

30

सन्ति संपाइमा पाणा, आह्व सपयन्ति य ।

फरिसं च खलु पुट्टा (यथा ३, १९-२१) उद्वायन्ति ।
 (५) एत्थ सत्थ (यथा २, १९-२२ नवर पुट्टवि स्थाने चाउ ण्णनीय)....
 परिन्नाय-कम्मो—त्ति वेमि ॥

(६) एत्थ पि जाणे उवार्हियमाणा
 जे आयारे न रमन्ति,

5

आरम्भमाणा विणय वयन्ति;
 छन्दोवणीया अज्झोववन्ना
 आरम्भसत्ता पकरन्ति सग ।

से वसुम सव्व-समन्नागय-पन्नाणेण अप्पाणेण अकरणिज्ज पाब कम्मन्तं नो अज्जेत्ति ।

(७) त परिन्नाय मेहावी ... (यथा २, २०-२२ नवर पुट्टवि स्थाने छाज्जीवनिकाय 10
 भगर्नद) परिन्नाय-कम्मो—त्ति वेमि ॥

लो ग वि ज ओ

२-१

(१) जे गुणे से मूल-ड्डाणे, जे मूल-ड्डाणे से गुणे ।

इति से गुणट्ठी

महया परियावेण वसे पमत्ते,

तं-जहाः— ' माया मे, पिया मे, माया मे, महणी मे, भज्जा मे, पुत्ता मे, धूया मे, 15
 सुहा मे, सहि-सयण-सगन्ध-सथुया मे, विचिचोवगरण-परियट्ठण-भोयण'च्छायण मे ' ;
 ' इच्चत्थ गट्ठिए लोए ' । ' वसे पमत्ते '

अहो य राओ परितप्पमाजे

कालाकाल-समुट्ठाई सजोगट्ठी अत्थालोभी आलुम्पे

महसाकारे विनिविट्ठ-चित्ते

20

' एत्थ सत्थे पुणो-पुणो ' ।

(२) अप्प च खलु आउ इहमेगोत्ति माणवाण,

त-जहा.—सोय-परिन्नाणेहि परिहायमाणेहि, चक्खु-प० प०, घाण- प० प०,
 रस-प० प०, फास-प० प०; अभिक्कन्त च खलु वय संपेहाए—तओ से एगया मूढ-
 भाव जणयन्ति; जेहि वा सद्धि सवसद, ते व ण एगया नियगा पुंवि परिवयन्ति सो वा ते 25
 विनियगे पच्छा परिवएज्जा ।

नाल ते तव ताणाए

वा सरणा ए वा, तुमग्धि तेत्ति नाल ताणाए वा सरणाए वा । (३) ' से न हस्साए,
 न किट्ठाए, न ररेए, न विमुत्ताए ' इत्थेव समुट्ठिए 'अहो विहाराए' । अन्तर च खलु इम संपेहाए

धीरे मुहुत्तमवि नो पमायए;

30

वओ अत्थे जेव्वण च जीविए

इह जे पमसा,—

से हन्ता छेता भेषा लुम्पिता विडम्पिता उद्देवेता उतासइता 'अकडं करिस्तामि' ति मन्त्रमाणे । जेहिं वा ... (यथा ५, २५-२८. नवर परिचयन्ति तथा परिचयज्ञा स्थाने पोसेन्ति तथा पोसेज्ञा भण्णीयं) ... सरणाए वा । (४) उवाइय-सेसन्तेण वा सन्निहि-सन्निचओ कज्जइ ४इहेमिगिसिं माणवाण भोयणाए । तओ से एगया रोग-समुप्पाया समुप्पज्जन्ति; जेहिं वा (यथा ५, २५-२८ नवर परिहरन्ति तथा परिहरेज्ञा पठनीय) सरणाए वा ।

(५) जाणित्तु दुक्ख पत्तेय-साय

अणभिकन्तं च खलु वय सपेहाए

खण जाणाहि पण्डिए

- 10 जाव सोत्त-परिनाणेहिं अपरिहायमाणोहिं, नेत्त-प० अ० , घाण-प० अ०, रस-प० अ०, फास-प० अ०; इच्चेएहिं विरूव-रूवेहिं परिनाणेहिं अपरिहायमाणेहिं । आयइ सम्म समणुवासे-ज्जासि—ति बेमि ॥

२-२

(१) अरइ आउट्टे से मेहावी;

खणंसि मुक्के अणाणाए

15

पुट्ठा वि एगे नियट्ठन्ति मन्दा माहेण पाउडा.

“ अपरिग्गहा भविस्सामो ” समुट्ठाए लद्धे कामे'भिगाहर

अणाणाए मुणिणो पडिलेहन्ति; एत्थ मोहे पुणो पुणो

सत्ता नो हव्वाए नो पराए ।

विमुत्ता हु ते जणा, जे जणा पार-गमिणो ।

20

लोभ अलोभेण दुमुच्छमाणे

लद्धे कामे नो'भिगाहर ।

विणइत्तु लोभ निक्खम्म

एस अकम्मे जाणइ पासइ, पडिलेहाए नावकखइ, एस

अणगारे ति पवुच्चइ ।

25

(२) 'अहो य राओ....(यथा ५, १९-२१). पुणो-पुणो'से आय-बले, से नाए-

बले, से मित्त-बले, से पेच्च-बले, से देव-बले, से राय-बले, से चोर-बले, से अरहि-बले, से

किवण-बले, से समण-बले, (३) इच्चेएहिं विरूव-रूवेहिं कज्जेहिं दण्ड-समायाण सपेहाए

भया कज्जइ 'पाव-मोक्खो' ति मन्त्रमाणे अट्टु वा आमसाए । त परिन्नाय मेहावी-

नेव सय एएहिं कज्जेहिं दण्ड समारम्भेज्जा, नेव'ल एएहिं कज्जेहिं दण्ड समारम्भावेज्जा, नेव'ल

30 एएहिं दण्ड समारभन्त समणुजाणेज्जा । एस मग्गे आरिएहिं पवेइए, जहेत्थ कुसले नोवलिप्पे-

ज्जासि—ति बेमि ॥

२-३

(१) से असइ उच्चा-नोए, असइ नीय्क-गोए, नो हीणे, नो अररित्ते नो पीइए । इति सत्ताए के गोया-वार्इ, के माणा-वार्इ, फसि वा एगे गिज्जे ? (२) तम्हा

पण्डित्वा नो हरिसे, नो कुञ्चे

भूएहि जाण पडिलेह साय
समिए एयाणुपस्ती,

त-जहा : अन्धत बहिरत्त मूयत्त काणत्त कुण्टत्त खुज्जत्त वडभत्त सामत्त तबलत्त, सह
पमाएणं अणेग-रूवाओ जोणीओ सधेइ, विरूव-रूवे फासे पडिसवेएइ। (३) से अबुज्जमाणे हओवहए 5
जाई-मरण अणुपरियट्टमाणे ।

जीविय पुढो पिय इह भेगेसि माणवाण खेत-वत्थु ममायमाणाण; आरत्तं विरत्त माणि-
कुण्डलं सह हिरण्णेण, इत्थियाओ परिगिज्ज तत्थेव रत्ता, न एत्थ तवो वा दमो वा नियमो
वा दिस्सइ;

सपुण्ण बाले जीविउ-कामे लालप्पमाणे 10
मूढे विप्परियासु'वेह ।

(४) इणेमव नावकखन्ति जे जणा पुव-चारिणो;
जाई-मरण परिजाय चरे सकमणे दढे ।
नत्थि कालस्सणागमो—सव्वे पाणा पिया'ऊया

सुइ-साया दुक्ख-पडिकूला 15
अप्पिय-वहा पिय-जीविणो जीविउ-कामा । सव्वेसिं जीविय पिय,

(५) त परिगिज्ज दुपय चउप्पय
अभिलुज्जियाण ससचियाण

तिविहेण—जा वि से तत्थ मत्ता भवइ अप्पा वा बहुगा वा, से तत्थ गट्टिए चिट्ठइ
भोयणाए । तओ मे एगया विपरिसिद्ध सभूय महोवगरण भवइ, त पि से एगया दायादा विभ-20
यन्ति, अदत्तहारो वा से अवहरइ, रायाणो वा से विउम्पन्ति; नस्सइ वा से, विनस्सइ वा से,
ऽनगर-दाहेण वा से डज्जइ । इति से परस्सट्ठाए

कूराहं कम्माइ बाले पकुव्वमाणे
तेण दुक्खेण मूढे विप्परियासु'वेह ।

मुणिणा हु एय पवेइय 25

अणोइन्तरा एए, नो य ओह तरित्तए ;

अतीरगमा एए, नो य तीर गमित्तए ; अपारगमा एए, नो य पारं गमित्तए ।

आयाणिज्ज च आयाय तम्मि ठाणे न चिट्ठइ,

वित्तइ पप्प'खेयन्ने तम्मि ठाणम्मि चिट्ठइ ।

उद्देसो पासगस्स नत्थि; बाले पुण निहे काम-समणुणे असमिय-दुक्खे दुक्खी 30
दुक्खाणमेव आवट्टमणुपरियट्टइ—सि वेमि ॥

परिचयन्ति तथा पस्विपस्वजा भणनीय)... सरणाए वा ।

(२) जाणित्तु दुक्ख पत्तये-साय

भोगामेव अणुसोयन्ति—इह मेगेसिं माणवाण—तिविहेण....(यथा७,१९-२१ नवर अवहरह स्वाने हरह भणनीय)....विप्परियासुवेह':—

5 (३) आस च छन्द च विगिच धीरे, तुम चेव,
त सल्ल आहट्टु; जेण सिया, तेण नो सिया ।
इणमेव नावबुज्जन्ति जे जणा मोह-पाउडा ।

थीमि लोए पव्वहिए; ते भो वयन्ति: “ एयाइ आययणाइ ” । से दुक्खाए मोहाए
माराए नरगाए नरम-तिरिक्खाए ! सयय मूढे धम्म नाभिजाणह ।

10 चयाहु वीरे. अप्पमाओ महा-मोहे !

(४) अल कुसलस्स पमाएणं सन्ति-मरण संपेहाए, भेउर-धम्म संपेहाए ।

“ नाल पास ”—अल तव एएहिं !

एय पास, मुणी, महब्भय, नाइवाएज्ज कचण ।

एस वीरे पत्तसिए, जे न निव्विज्जइ आयाणाए

15 ' न मे देइ ' न कुप्पेज्जा, थोव लध्दु न खिसिए,

पड्डिसिहिओ परिणमेज्जा ।

एयं मोण समणुवासेज्जासि—त्ति वेमि ॥

२-५

(१) जमिण विरूव रुवेहि सत्थेहिं लोग्गस्स कम्म-ममारम्भा कज्जन्ति, त-जहाः
अप्पणो से पुत्ताण धूयाण मुण्हाण नार्हण धार्हण रार्हण दासाण दामाणि कम्म-कराण कम्म-
20 करीण आएसाए, पुढो पहेणाए, सा'मासाए पायरासाए सन्निहि-सन्निचओ कज्जइ (२) इह
मेगेसिं माणवाणं भोयणाए

समुट्ठिए अणगारे आरिए आरिय-पत्ते आरिय-दसी

' अय सर्धा ' ति अहक्खु मे नाइए नाइयावए न समणुजाणाइ ।

सव्वामगन्धे परिन्नाय निरामगन्धे परिव्वए ।

25 (३) अदिस्समाणे कय-विकणसु

से न किणे, न किणावए, किणन्त न समणुजाणए । से भिक्खू कालत्ते बलत्ते मायत्ते
स्वेयत्ते खणयत्ते विणयत्ते स-समयत्ते पर-समयत्ते भावत्ते,

परिग्गह, अममायमाणे,

काले'णुट्ठाई अपडिन्ने, दुहओ

30 छित्ता नियाइ ।

वन्थ पडिग्गह,

कम्मलं पत्थ-पुञ्जणं ओग्गह च कडासणः

एएसु चेव जाणेज्जा
लद्धे आहारे अणगारो माय जाणेज्जा

से जहे'य भगवया पवेइय

' लामो ' ति न मज्जेज्जा, अलामो ' ति न सोथए,

बहु पि लधु न निहे ।

5

परिग्हाओ अप्पाण अवसक्केज्जा, अन्नहा ण पास परिहरेज्जा । एस मग्गे आरिएहिं
पवेइए, जहे'त्य कुसले नोवलिप्पेज्जामि—ति वेमि ।

(४) कामा दुरइकमा, जीविय दुप्पडिवूइण,

काम-कामी खलु अय पुरिसे, से सोयइ जूरइ तिप्पइ पिट्टइ परितप्पइ ।

आयय-चक्खू लोग-विपस्मी

10

लोगस्स अहे-भाग जाणइ, उट्टु माग जाणइ, तिरिय माग जाणइ गट्टिए अणुप-
रियट्टमाणे;

मधि विइता इट्ट मच्चिण्हिं

' एस वीरे पमसिण, जे वट्टे पडिमोयण ' ।

(५) जहा अन्तो तथा प्राणि, जहा वाहिं तथा अन्तो । अन्तो-अन्तो पृह-वेह-16
पराणि पासइ पुढो विमवन्ताइ पण्डिण पडिहेहाए,

से मइम परिःसाण ।

मा य तु लाल पन्चासी,

मा तेसु तिरिच्छ अप्पाण आवायाण । कामकमे'य खलु पुरिसे, बहु-नार्ह, कट्ठेण मूढे
णो त करेइ लोभ;

20

वेर वट्टेहि अप्पणो ।

जमिण परिकहिज्जइ, इमस्म चेव पडिवूइणयाए,

अमरायइ महा-सट्टी,

अट्टमेय तु पेहाए अप्परिःसाणं कन्दइ,

" से त जाणइ, जमह वेमि ' "

25

(६) तेइच्छ पण्डिए पवयमाणे । से हन्ता हेत्ता भेत्ता लुम्बिता विलुम्बिता चह्व-
त्ता ' अकळ करिस्सामि ' ति मज्जमाणे ।

जस्म वि य ण करेइ,

अल बालस्म मग्गेण,

जे वा से कारेइ, बाले ।

30

न एव अणगारस्म जायइ—ति वेमि ॥

२-६

(१) से त सबुज्जमाणे आयाणिय, समुट्टाए—तम्हा पाव कम्म

ने'व कुज्जा न कारवे ।

सिया तत्त्रे'गयर विपरामुसह,

छसु अन्नयरम्मि कप्पइ ।

मुहड्डी लालप्पमाणे

सएण दुक्खेण मूढे विपरियासु'वेइ ।

5

सएण वि प्पमाणेण पुढो वय पकुब्बइ,

जासि'मे पाणा पव्वहिया । पडिलेहाए " नो निकरणाए "

एम परिन्ना पवुच्चइ, कम्मोवसन्ती ।

जे ममाइय-मइ जहाइ, से जहाइ ममाइय;

से हु दिट्ठ-मए मुणी, जम्म नथि ममाइय ।

10

त परिन्नाय मेहावी

विइत्ता लोग, वन्ता लोग-सन्न

से मइम परकमेउज्जामि—ति वेमि ।

(३) नारइ सहण वीरे, वीरे नो सहण रइ;

जम्हा अविमणे वीरे, तम्हा वीरे न रज्जई ।

15

सदे य फामे अदियासमाणे

निव्विन्द नन्दि इह जीवियम्म ।

मुणी मोण समायाय धुणे कम्म-सरारिण,

पन्त लुह सेवन्ति वीरा सम्मत दमिणो ।

एस ओहतरे मुणी तिण्णे मुत्ते विरण वियात्तिण—ति वेमि ।

20

(४) दुव्वमु-मुणी अणाणाण तुच्छण गिलाइ वयुण

'एस वीरे पसस्सिण', 'अच्चेइ लोग-मज्जोण, एम नाण पवुच्चइ', ज दुक्ख पवेइय 'इह माणवाण'
तस्स 'दुक्खम्म कुमळा परिन्न उदाहरन्ति' (५) ' इति कम्म परिन्नाय मव्वमो' ।

जे अणन्न-दमी से अणन्नारामे, जे अणन्नारामे से अणन्न-दमी

जहा पुण्णम्म कथई, तहा तुच्छम्म कथई ।

25

जहा तुच्छम्म कथई, तहा पुण्णम्म कथई । अवि य हणे अणाइय माणे

एत्थप्पि ज्ञाण मेय नि नथि

" कैय पुरिमे क च नग ? । " ' एस वीरे पममिण, जे बद्धे पट्टिमोयए "

एड्डु अह तिरिय दिमानु,

मे मव्वत्रा मव्व-परिन्न-चारी

30

न लिप्पई छण-पण्ण वीरे ।

से मेहावी, जे अणुमघायणम्म वेयत्ते, जे य वन्थ-पमोक्खमत्तेसी

कुमले पुण नो वद्धे

नो मुक्के से उज च आरभे ज च नारभे ।

(५) अणारद्ध च नारभे,

छण-छणं परिज्ञाय लोग सन्न च सन्वसो ।
उद्देसो पासगस्त ..(यथा ७,३०) ... आवट्ट अपुपरियट्टइ—ति वेमि ॥

सी ओ स णि ज्ञं

३-१

(१) सुत्ता असुणी, सुणिणो सयय जागरन्ति;
लोगमि जाण अहियाय दुक्ख ।

समय लोगम्म जाणित्ता

5

एत्थ सत्थोवरणं । जम्मि'मे सद्दा य रुवा य गन्वा य रसा य फासा य अभिसमन्नागया
भवन्ति, (२) से आयव नाणव वेयव धम्मव वम्मव, पन्नाणेहिं परिजाणइ लोग ।

सुणी ति वच्चे, धम्मविउ ति अट्ट,

आवट्ट-सोए सगमिण'भिजाणइ ।

सीओसिण-च्चाई मे निग्गन्थे अरइ-रइ-सहे फरुसिय नो वेएइ ।

10

जागर वेरावरणं वीरे एव दुक्खा पमोक्खसि ।

(३) जरा-मच्चु-वमोवणीणं नरे,
सयय मूढे धम्मं नाभिजाणइ ।

पासिय आउरे पाणे अमत्तो परिववणं ।

मन्ता एय अहिय ति पास

15

' आरम्मज दुग्गमिणं ति नच्चा

माई पमाई पनरेइ गळम ।

उवेहमाणो मद्द-ग्गवेमु उज्जू

माराभिमकि मरणा पमुच्चइ ।

अप्पमतो कामेहिं, उवरओ पात्र-कम्मेहिं, वीरे आय-गुत्ते, जे खेयत्ते । (४) जे 20
पज्जवजाय-सत्थम्म खेयत्ते; मे अम धम्मस खेयत्ते; जे असत्थस्त खेयत्ते, मे पज्जवजाय-
सत्थम्म खेयत्ते ।

अकम्मस्स ववहारो न विज्जइ

कम्मणा उवाही जायइ ।

कम्म च पडिलेहाए कम्म मूलं च ज छण पडिलेहिय, सन्न समायाय 25

दोहि अतोहि अदिस्समाणे

त परिज्ञाय मेहावी

विहत्ता लोग, वन्ता लोग-सन्न

से महम परकमेज्जासि—ति वेमि ॥

३-२

१. जाइ च बुद्धि च इह'ज्ज पाम,
भूएहिं साय पडिलेइ जाणे;
तम्हा'इविज्जो ' परम ' ति नच्चा
सम्मत्त-दमी न करेइ पाव ॥
२. उम्मुञ्च पास इह मच्चिण्हि;
आरम्भ-जीवी उभयाणुपस्सी
कामेसु गिद्धा निचय करेन्ति,
ससिच्चमाणा पुनरेन्ति गब्भ ॥
३. अवि से हासमामज्ज ' हन्ता नन्दी ' ति मन्नइ ।
अल बालस्स सगेण, वेर वट्ठइ अप्पणो ॥
४. तम्हा'इविज्ज ' परम ' ति नच्चा
आयक-दमी न करेइ पाव;
अग च मूल च विगिञ्च धीरे
पल्लिच्छिन्द्रिय ण निक्कम्म-दमी ॥
- (१) एस मरणा पसुत्तइ, से ट्टु विट्ठ-मण सुण्णि;
लोगमि परम-दमी
विवित्त-जीवी उचमन्ते ममिण मणि मया ज्ञा
इत्तकम्म परिचवण ।
बहु च खलु पाव कम्म पणट ।
सच्चमि' गिट वृत्तहा ।
- एत्थोवरण मेहावी सव पाव कम्म दाप्पे । (२) अणम-चित्ते खलु अय पुरिसे
से केयण अरिहइ पूरइत्तण, से अन्न-वहाण अन्न-परियावाण अन्न-परिगहाण, जणवय-वहाए
अणवय-परियावाण जणवय-परिगहाण ।
- (३) आसेविता णयमट्ट इत्तच्चे वे मे मसुद्धिया,
तम्हा न विइय नो सेवण निम्मार पासिय नाणी ।
उचवाय चवण नच्चा अणन्न चर माहणे ।
से न छणे न छणावण छणन्त नाणुत्ताणण ।
निज्जिन्द नान्दि अरण पयागु
अणोमदमी
- नित्तण्णो पावेहि कम्मोहि ।
५. कोहाइमाण हाणिया थ वीरे,
लोभस्स पासे निरय महन्त;
तम्हा हि वीरे विरओ वहाओ

छिन्देज्ज सोय लहुम्य-गामी ।

६. गन्ध परिन्नाय इह'ज्ज वीरे
सोय परिन्नाय चरेज्ज दन्ते;
उम्मुग्गो लब्धु इह माणवेहिं
नो पाणिण पाणे समारभेज्जासि—त्ति वेमि ॥

5

३-३

- (१) सद्धि लोगस्स जाणित्ता
आयओ बहिया पास, तम्हा न हन्ता न वि घायए ।
जमिण अन्नमन्न-विडगिज्जाए
पडिलेहाए न बरेड पाव कम्म,
किं तथ, मुणी, कारण सिखा ? 10
१. समय तत्थु'वेहाए अप्पाण विप्पसायण;
अणन्न-परम-न्नाणी नो पमाए कयाइ वि ॥
आय-गुत्ते सया धीरे जाया-मायाए जावण,
- (२) विराग क्वेसु गच्छेज्जा महया खुड्डणहि वा ।
आगइ गड परिन्नाय 15
दोहिं वि अन्तेहिं अदिस्समाणे
मे न छिज्जइ न भिज्जइ न डज्जइ,
न हम्मइ (३) कचण मज्ज लोण ।
अवरेण पुज्ज न सरति एगे
क्रिम्म'इय किं वा'गमिस्स, 20
भासति एगे इह माणवा उ
जमस्स'इय तना'गमिस्स ।
नाइयमद्द न य आगमिस्स
अद्द नियच्छन्ति तहागया उ;
विधूय कप्पे एयाणुपस्सि 25
निज्जोसइत्ता खवण महेसी ।
२. का अरइ के या'णन्दे ? ए थ पि अग्गहे चरे;
सव्व हास परिच्चज्ज अट्ठीण-गुत्तो परिव्वए ।
- (४) पुरित्ता ! तुममेव तुम-मित्त, किं बहिया मित्तमिच्छसी ?
ज जाणेज्जा उच्चालइय, त जाणेज्जा दूरालइय; ज जाणेज्जा दूरालइय; त जाणेज्जा 30
उच्चालइय ।
पुरित्ता ! अत्ताणमेव अभिनिगिज्जा, एव दुक्खा पपोक्खसि ।

पुरिसा ! सच्चमेव समभिजाणहि ! सच्चस्स आणाए उवट्ठिए मेहावी मार तरइ ।
सहिए धम्ममायाय सेय समणुपस्सइ ।

दुहओ जीवियस्स परिवन्दण-माणण-पूयणाए, जसि एगे पमायन्ति; सहिए दुक्खमत्ताए
पुट्टो; नो शब्बाए ।

6 पाप्पिम दविए लोण लोमालोग-पवञ्चाओ पमुच्चइ—त्तिवेमि ॥

३-४

(१) से वन्ता कोह च माण च माय च लोम च एय पाप्पमस्स दसण, उवरय-
सत्थस्स पलियन्त-करस्स आयाण सगडब्भि । जे एग जाणइ, से सव्व जाणइ; जे सव्व जाणइ,
से एग जाणइ । सव्वओ पमत्तस्स भय, सव्वओ अप्पमत्तस्स नत्थि भय । २ जे ' एग ' नामे,
से ' बहु ' नामे; जे ' बहु ' नामे, से ' एग ' नामे ।

10 दुक्ख लोमस्स जाणित्ता वन्ता लोमम्म सजोग
जन्ति वीरा महा-जाण, परेण पर जत्ति, नावक्खन्ति जीविय ।
(३) एग विगिञ्चमाणे पुटो विगिञ्चइ, पुटो विगिञ्चमाणे एग विगिञ्चइ ।
सुट्टी आणाएँ मेहावी,
लोम च आणाए अभिममेच्चा अकुओभय ।

15 अत्थि सत्थ परेण पर, नत्थि असत्थ परेण पर
(४) जे कोह-दमी से माण-दमी, जे माण-दमी से माय-दमी, लोम-द०
पेज्ज-द० दोम-द० मोह-द० पज्ज-द० जम्म-द० मार-द० नय-द०
तिरिय-द० दुक्ख-दमी । से मेहावी पमिनिचत्तेज्जा कोह च माण च
माय च लोम च पेज्ज च दोम च मोह च गज्ज च जम्म च मार च नय च तिरिय
20 च दुक्ख च । एय (यमा ६) अयाण निमित्तं सगट्ठिम । त्थिमात्थि उवाही
पाप्पमस्स ? न विज्जइ, नत्थि--त्ति वेमि ॥

म म्म सं

४-१

(१) मे वेमि जे य अइया जे य पटुप्पत्ता जे य आगमिस्सा अरहन्ता भग-
न्वतो, सव्वे ते एवमाइक्खन्ति एव मामन्ति एव पत्तन्ति एव पक्खन्ति.—सव्वे पाणा
सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता न हन्तन्ना न अज्जावेयव्वा न परिघेतव्वा न परियावेयव्वा
25 न उद्दवेयव्वा । (२) एम धम्मे सुद्धे पित्तिण मामण समेच्च लोम खेयत्तेहि पवेइए, त जहा-
उट्ठिएणु वा अणुट्ठिएणु वा, उवट्ठिएणु वा अणुवट्ठिएणु वा, उवरय-दण्ठेणु वा अणुवरय
दण्ठेणु वा, सोवहिणु वा अणुवहिणु वा, सजोग-रणु वा असजोग-रणु वा ।

तच्च चैय तद्दा चैय, अम्मि चैय पवुच्चइ ।

(३) त आइत्तु न निहे, न निक्खिक्खे, जाणित्तु धम्म जहा-तहा ।

दिद्विहं नुव्वेय गच्छेज्जा, नो लोगस्से'सण चरे ।

जस्स नत्थि इमा नाई, अत्ता तस्स कओ सिया ?

दिद्व सुय मय विन्नाय, ज एव परिकहिज्जइ । समेमाणा चलेमाणा ' पुणो-पुणो जाइ पकप्पेन्ति ' ; ' अहो य राओ जयमाणे धीरे, ' सया आगय-पन्नाणे ।

पमत्ते बहिया पाम, अप्पमत्ते सया परकमेज्जासि—त्ति वेमि ॥

5

४-२

(१) जे आमवा ते परिस्मवा, जे परिस्मवा ते आमवा । जे अणामवा ते अपरिस्मवा, जे अपरिस्सवा ते अणामवा । एण एण मवुज्जमाणे लोग च आणाण अभिसमेच्चा पुढो पवेइय

आधाड नाणी इह माणवाण

मसार पाडिवन्नाण सवुज्जमाणेण विन्नाण-पत्ताण

(२) अट्टा वि सन्ता अट्टु वा पमत्ता ' 10

अहा-मच्चमिण ति वेमि

ना णागमो मच्चु-मुहम्म अत्थि;

इच्छा-पग्गाया वकानिकेया

काल-ग्गाहाया निच्चण निविट्टा

पुट्टो-पुट्टो जाड पकप्पयन्ति । 15

(३) ण्णे वयन्ति अट्टु वा वि नाणी

नाणी वयन्ति अट्टु वा वि ण्णे

आवन्ती केया वन्ती लोगमि समणा य माहणा य पुढो विवाय वयन्ति.—“ से दिद्व च णे, मुय च णे, मय च णे, विचाय च णे,

उट्टु अहे यो तिरिय दिसासु 20

सव्वओ सुपडिल्लेहिय च णे मव्वे पाणा सव्वे नूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता हन्तव्वा अजावेयव्वा परिघेतव्वा उद्दवेयव्वा,

एत्थ पि जाणहः नत्थेत्थ दोसो ” ।

(४) अणारिय-वयणमेय । तत्थ जे ते आरिया, ते एव वयामी —“ से दुद्विद्व च भे, दुम्मुय च भे, दुम्मय भे, दुव्विन्नाय च भे, ' उट्टु दुप्पडिल्लेहिय च भे, 25 ज ण तुम्भे एवमाइक्खह एव मामह एण पत्तवेह एवं परूवेह सव्वे दोसो' । अणारियवयण-

मय । (५) वय पुण एवमाइक्खामो एव भासामो एव पत्तवेमो एव परूवेमो सव्वे पाणा ४ न हन्तव्वा न अजावेयव्वा न परिधावेयव्वा न परिघेतव्वा न उद्दवेयव्वा; ' एत्थ पि जाणह नत्थेत्थ दोसो । ' आरिय-वयणमेय ” । पुव्व निकाय समय पत्तेय-पत्तेय पुच्छि-स्सामो—“ इ भो पावाउया ' किं भे साथ दुक्ख उयाहु आसाय ? ” ममिया-पडिवन्ने यावि 30 एवं नूया.—“ सव्वेसि पाणाण ४ असाय अपरिणिन्वाण महम्मय दुक्ख ” ति—त्ति वेमि ॥

४-३

- (१) उवेह एण बहिया य लोग ।
 से सव्व-लोगसि जे केह विन्नु ;
 अणुवीइ पास निक्खित्त-दण्डा
 जे केह सत्ता पालिय चयन्ति ।
 5 नरा सुय'च्चा धम्मविउ ति अञ्जु
 ' आरम्मज दुक्खमिण ' ति नच्चा
 एवमाहु सम्मत्तदसिणां (२) ते सव्वे पावाइया ;
 दुक्खस्स कुसला परिन्नमुदाहरन्ति
 ' इति कम्म परिन्नाय सव्वसो ' । इह आणा-कखी पण्डित्तं अनिहे
 10 णमपपाण सपेहाण धुणे सरारंग,
 कसेहि अप्पाण, जरेहि अप्पाण
 जहा जुण्णाइ कट्टाइ हव्ववाहो पमन्थइ ।
 एवमत्त-समाहिए अनिहे
 विगिञ्च कोह आविक्कममाणे
 15 इम निरुद्धा'उय सपेहाण,
 दुक्ख च जाण अदु चा'गमिम्म,
 पुढो फासाइ च फासए
 लोग च पास विप्फन्दमाण,
 (३) जे निव्वुडा पावेहि कम्मोहि अनियाणा ते वियाहिया ।
 20 तम्हा'इविज्जो नो पट्टिमज्जेज्जासि—त्ति वेमि ॥

४-४

- (१)
 आवीलण पधीलण निरपीलण
 जहिता पुव्व-सजोग
 हिच्चा उवसम ;
 तम्हा अविमणे वीरे
 25 सारए समिए सहिए सया जए—दुरणुचरो मग्गो वीराण अनियट्ट-गामीण—
 विगिञ्च मम-सोणिय ।
 (२) एस पुरिसे दविए वीरे आयाणज्जे वियाहिए,
 जे धुणाइ समुस्सव
 वसिणा बम्भचेरसि ।
 30 नेत्तेहि पलिच्छन्नोहि
 आयाण-सोय-गटिए बाले अब्बोच्छिन्न-बन्धणे अणभिकन्त-संजोए,

तमसि अविजाणओ

आणाए लम्भो नत्थि ति बेमि,

(३) जस्त नत्थि पुरा पच्छा, मज्जे तस्त कुओ सिया ?

से हु पन्नाणमन्ते बुद्धे आरम्भोवरए;

सम्ममेय ति पामहा ।

5

जेण बन्ध वह घोर परियाव च दारुणं

पलिच्छिन्दिय वाहिरग च सोय

निक्कम्म-दसी इह मच्चिचएहि,

कम्मणा स-फल दद्दु तओ निज्जाइ वेयवी ।

(४) जे खलु भो वीरा समिया सहिया सया जया सघड-दसिणो आओवरया 10

अहा-तह लोग उवेहमाण,

पार्शण पडीण दाहिण उदीण इति, सच्चसि परिविचिद्धिमु, साहिस्सामो नाण वीराण
समियाणं सहियाण सया जयाण सपड-दसीण आओवरयाण अहा-तहा लोग समुप्पेहमाण ।
किमत्थि उवाही पासगस्त ? न विज्जइ, नत्थि—ति बेमि ॥

लो ग सा रो

(आवन्ती)

५-१

(१) आवन्ती केया'वन्ती लोगसि विपरामुमन्ती अट्टाण अणट्टाण वा एणमु चैव 15
विपरामुमन्ती । गुरू मे कामा, तओ मे मारम्म अन्तो, जओ मे मारम्म अन्तो, तओ मे
दूरे । नेव से अन्तो, नेव से दूरे । से पामइ कुमिपमिव कुमगे पणुन्न निवडय वाणरिय

एव वालस्म जीविय मन्दम्म अविजाणओ ।

कुराइ कम्माइ वाले पकुवमाणे

तेण दुक्खेण मूढे विपरियाममेइ,

20

मोहेण गम्भ मरणाइ एइ,

' एत्थ मोहे पुणो-पुणो' । ससय परिजाणओ संसारे परिन्नाए भवइ; ससय अपरि-
जाणओ ससारे अपरिन्नाए भवइ ।

जे छेए, सागारिय न सेवण,

कट्टु एवमवयाणओ बिइया मन्दस्त बालिया लद्धा हुरत्था ।

25

पडिलेहाए आयमेत्ता अणासेवणाए—ति बेमि ।

(२) पासइ एगे

रूवेसु गिट्ठे परिणिज्जमाणे,

' एत्थ फासे पुणो-पुणो' ।

आवन्ती केया'वन्ती लोगसि आरम्भजीवी, एणमु चैव आरम्भजीवी

। 30

एथ वि बाले परिपच्चमाणे

रमइ पावोहिं कम्मेहिं

असरण ' सरण ' ति मन्नमाणे ।

इहमेगेसिं एग-चरिया भवइ । (३) मे बहु-कोहे बहु-माणे बहु-माणे बहु-लोभे, बहु-ए ५ बहु-नडे बहु-सडे बहु-सकप्पे आसव-सक्का पलिओच्छन्ने; उट्टिय-वाय पवयमाणे—' मा मे केइ अदक्खू ' । अन्नाण-पमाय-दोमेण सयय मूढे धम्म नाभिजाणइ ।

अट्टा पया, माणव, कम्म कोविया,

जे अणुवरया अविज्जाए पलिमोक्खमाहु, आवट्टमेव अणुपरियट्टन्ति—ति बेमि ॥

५-२

(१) आवन्ती केया'वन्ती लोगामि अणारम्म-जीवी, एणमु चेव अणारम्मजीवी ।
10 एथोवरण त शोममाणे

' अय सधी ' ति अदक्खू, जे ' इमस्स विग्गहस्स अय खणे ' ति अन्नेसी ।

एस मग्गे आरिएहिं पवेहेण ।

(२) उट्टिण नो पमायण ।

15

' जाणित्तु दुक्ख पत्तेय-माय ' ;

पुढो-छन्दा इह माणवा—पुढो दुक्ख पवेइयं ।

मे अविहिंममाणे अनवयमाणे

पुढो कामे विपणोहण, एम समिया-परियाणु वियाणिण ।

(३) जे असत्ता पावोहिं कम्मेहिं उयाहु " ते आयकू कुपति " इति, उयाहु
2) वारे ' ते फासे पुट्टे'हियामण' । मे पुज्व पेय पच्छा वेध भेउर-यम्म विट्ठमण-यम्म अधुव
अभितिय असासय चय'वचउय विपरिणाप-यम्म पामत । एवरुव मायं समुवेदमाणम्म एगाय-
यण-रयस्स इइ विप्पमुक्खम्म नयि मग्गे विरयम्म—ति बेमि ।

(४) आवन्ती केया'वन्ती लोगामि परिग्गहावन्ती मे अप्प वा बहु वा अणु वा
थुल वा चित्तमन्त वा अचित्त वा, एणमु चेव परिग्गहावन्ती, एयदेवेगेसिं मत्तकमय भवइ ।

25

लोग-वच च ण उवेहाण, एण मग्गे अविजाणओ,

' से मुप्पड्डिवुद्ध मूवणीय ' ति नच्च

पुरिमा ! परम-चक्खू विप्पगम्म एणमु चेव वम्मचेर ! ति बेमि;

(५) " से मुय च मे अज्जाथ च मे "

बन्ध-प्पमोक्खो तुज्जा'ज्जाथेव ।

30

एथ विरए अणगारे दीह-राय निइक्खए;

पमत्ते वहिया पास, अप्पमत्ते परिक्खए ।

एयं मोण सम्म अणुवासेज्जानि—ति बेमि ।

५-३

(१) आवन्ती केया'वन्ती लोगसि अपरिग्गहावन्ती, एएमु चेव अपरिग्गहावन्ती ।
 सोच्चा बह मेहावी पण्डियाण निमायिया
 —समियाए धम्मे आरिएहिं पवेइए—“जहत्थ मए सधी शोसिए, एव अजत्थ; सधी
 दुज्जोसए भवइ । तस्हा बेमि”

नो निण्हवेज्ज वीरिय । 5

(२) जे पुव्वुट्ठायी नो पच्छा-निवाइ, जे पुव्वुट्ठाई पच्छा-निवाइ, जे नो पुव्वुट्ठाई नो
 पच्छा-निवाइ

से वि तारिमए मिया, जे परिन्नाय लोगमत्तेसिए ।

एय नियाय मुणिया पवेइय,

इह आणा कम्वी पण्डिण अग्निहे पुवावर-राय जयमाणे 16

मया मील मोंपहाण मुणिया भवे अकामे अशुञ्जे ।

इमेण चेव जुज्जाहि ' किं ते जुज्जेण वऱ्शओ ?

जुट्ठारिह खलु दुट्ठम ।

जहेथ कुमत्तेहिं परिन्ना-विवेगे भासिए ।

चुए ह् बाले गवमाइ रिज्जइ,

(३) ' अस्मि चय पवुच्चइह ' । ख्वसि वा छणमि वा ' से हु एगे संविद्धमए सुणी' 15

अन्नहा लोगमुव्वहमाणे

' इति कम्म परिन्नाय सव्वमो से न्हिसइ',

सजमई, नो पगम्भई ।

(४) उव्वेहमाणो पत्तेय माय वण्णाणमी 10

नारभे कचण सव्व-लोण,

एग-प्पमुहे विट्ठिम-प्पइण्णे

निट्ठिवण्ण-चारी अरण पयानु ।

से वसुम सव्व-समन्नायय-पन्न णेण अप्पाणेण अकरणिज्ज पाव कम्मन्त नो अन्ने-
 सी । ज सम्म ति पामहा, त मोण ति पामहा; ज मोण ति पामहा त सम्म ति पासहा । न 25
 इम सक्क सिट्ठिलेहिं आइज्जमाणेहि गुणामाणेहि वक्क-समायारेहिं पमत्तेहिं गारमावमन्तेहिं ।

(५) सुणी मोण समायाण धुजे कम्म-संगरग,

पन्त ल्ह च सेवन्ता वारा सम्मत्त-दमिणो ।

एस ओहन्ते सुणी तिण्णे सुत्ते विरए वियाहिए—ति बेमि ॥

५-४

(१) गामाणु-गामं दृइज्जमाणस्स 30

दुज्जाय दुप्परकन्त भवइ आवियत्तस्स भिक्खुणो

वयसा वि एगे बुइया कुप्पन्ति माणवा,

उन्मथमाणे य नरे महया मोहेण मुञ्जह—

(२) सबाहा बहवे भुञ्जो दुरइकमा अजाणओ अपासओ ।

एयं ते मा होउ ! एय कुसलस्स दसण,
तद्धिटीए तम्मुतीए तत्पुरकारे तस्सन्नी तन्निबेमणे
जय-विशारी चित्त-निवाई
पन्थ-निज्झाई बलि-बाहिरे

5

पासिय पाणे गच्छेज्जा ।

(३) से अभिक्कममाणे पडिक्कममाणे, संकुचेमाणे पसारेमाणे
विनियट्टमाणे सपल्लिमज्जमाणे ।

10

एगया गुण-समियस्स रीयओ काय-सफास अणुच्चिण्णा एगइया पाणा उद्दायन्ति; इह
लोग-वेयण-वेज्जावट्ठिय ।

ज आउट्टी-कय कम्म, त परिन्नाय विवेगमेइ;
एव से अप्पमाणेण विवेग किट्टइ वेयवी ।

(४) से प्हय-इमी प्हय-परिन्नाणे उवसन्ते महिण सया जए दुट्ट
विप्पडिवेण्ड अप्पाण ' किमेम जणो करिस्सइ ?
एस से परमारामे, जाओ लोगम्मि इत्थिओ ' ।

15

गुणिणा हु एय पवेइय (५) उब्बाहिज्जमाणे गाम-धम्मोहिं अबिनिब्बलासए,
अवि ओमोयरिय कुञ्जा, अवि उट्टु ठाण ठाणज्जा, अवि गामाणुगामं दृइज्जेज्जा, अवि बाहार
बोच्छिन्देज्जा, अवि चण इत्थीमु मण पुब्ब दण्डा पच्छा फासा, पुब्ब फासा पच्छा दण्डा-इच्चेए
कडहा सगकरा भवन्ति । पडिरेहाण आगमेत्ता आणवेज्जा अणामेवणाण—ति वेमि ।

20

से नो काहिण नो पामणिण नो सपमारण नो मामण नो कय-किरिण; ' वइ-गुत्ते
अज्झप्प-सवुडे ' परिवज्जए सया पाव । एय माण समणुयामेज्जासि—ति वेमि ।

५-७

(१) से वेमि त-जहा

अवि हरण पडिपुण्णे सममि भोमे चिट्टइ,

25

उवसन्त-रण मारक्खमाणे से चिट्टइ सोयमज्ज-गण ।

से पाम सव्वओ गुत्ते पाम ळेण महेसिणो,

जे य पन्नाणमन्ता पवुट्ठा आरम्मोवरय;

समम्येय ति पामहा ।

' कालस्स कखाण परिववयन्ति'— ति वेमि ।

30

(२) विगिच्छ-समावन्नेण अप्पाणेण नो लभइ सममहिं । ' सिया वे'गे अणुग-
च्छन्ति ?, असिया वे'गे अणुगच्छन्ति ? ' अणुगच्छमाणोहिं अणुगच्छमाणे कह न निविज्जे ?

(३) तमेव सच्च नामक, ज जिणेहिं पवेइय ।

सट्ठिम्म णं समणुत्तस्स सपव्वयमाणस्स ' सामिय ' ति मत्तमाणस्स एगया समिया

होइ, 'स०' ति म० ए० 'असमिया' हो०, 'असमियं' ति० म० ए० समिया हो०, 'अ०' ति म० ए० असमिया होइ। 'समिय' ति म० 'समिया वा असमिया वा', समिया होइ उवेहाए, 'असमिय' ति म० 'स० वा अ० वा' असमिया होइ उवेहाए। उवेहमाणं अणुवेहमाण बूया। "उवेहाहि समियाए"। इच्चेवं तत्थ सधीं झोसिए भवइ।

(४) ने उट्टियस्त ठियस्म गइ समणुपस्सह,

एत्थ वि बाल-भावे अप्पाण नो उवदमेज्जा।

तुम सि नाम त चेव ज 'हन्तव्वं' ति मन्नसि।

तुम सि नाम त चेव ज 'अज्जावेयव्व' ति मन्नसि, ... 'परियावेयव्व' ...

'परिधेत्तव्व' ... 'उद्देवेयव्व' .. 'अज्जू चेयपडिवुद्ध-जीवी।'

तम्हा न हन्ता न वि धायए।

(५) अणुसवेयण अप्पाणेण 'ज हन्तव्व' ति नामिपत्थए।

जे आया मे विन्नाया, जे विन्नाया से आया। जेण विजाणइ से आया। त पडुच्च पडिमस्वाए णम आया-वाइ।

समियाए परियाए वियाहिण—ति वेमि ॥

५-६

(१) अणाणाए एगे सोवट्टाणा, आणाए एगे निरुवट्टाणा एय ते मा होउ !¹⁵
एय कुसलस्त दसण, 'तद्धिट्ठीए तम्मसुत्तीए, तप्पुरक्कारे तम्मस्सन्ती तन्निवेसणे।'

अभिभूय अदक्खू अणभिभूय; पइ निरालम्भणयाए जे मह अबही मणे।

पवाएण पवाय जाणेज्जा सह-मम्मुइयाए पर-वायरणेण अन्नोसिं वा अन्तिए सोच्चा,

(५) निहंस नाइवतोज्जा मेहावी।

मुपडिलेहिय सव्वओ सव्वयाए मम्ममेव समभिजाणिया।

इहाराम परिन्नाय अट्टाण-गुत्तो परिव्वण,

निट्टियट्ठी वीरे आगमेण सया परकमेज्जासि—ति वेमि।

(२) उट्टु सोया अहे सोया तिरिय सोया वियाहिया,

एण सोया वियक्खाया जेहिं सग ति पासहा।

आवट्टु तु उवेहाए ण्थ विरमेज्ज वेयवी,

विणइनु सोय निकलम्म

एण महमकम्मा जाणइ पासह, पडिलेहाए नावकखइ; (३) इह आगइ गइ परिन्नाय अच्चेइ जाइ मरणस्त वडुमग विक्खाय-रण;

सव्वे सरा नियट्टन्ति।

तक्का जत्थ न विज्जइ, मई तन्थ न गाहिया।

ओए अप्पइट्टाणस्स खेयत्ते (४) से न दीहे न हस्से न वट्टे न तसे न चउरसे न परिमण्डले, न किण्हे न नीले न लोहिण न हालिंइ न सुक्किले, न सुरभिगये न दुरभिगधे, न तित्ते न कडुए न कत्ताए न अविले न महुरे, न कक्खडे न मउए, न गुरुए न लहुए, न सीए न उण्हे,

न निद्रे न लुक्से, न काऊ, न रुहे न संगे, न इत्थी न पुरिते न अन्नहा । 'परिज्ञे' सत्ते उवमा
न विउजह' । अरूबी सत्ता, अपयस्स पय नत्थि । से न सदे न रूवे न गन्धे न रसे न फासे इच्छे-
भावन्ति—सि वेमि ॥

धु यं

६-१

- (१) ओबुज्जमाणे इह माणवेसु
आघाइ से
नरे जस्सि'माओ जाईओ मवओ सुपडिलेहियाओ भवन्ति, अग्घाइ से धुयं णाणमणेस्सिं ।
से किट्ठइ तेसि ससुट्ठियाण निक्खत्त-दण्डाण
समाहियाण पन्नाणमन्ताण इह सुत्ति-मग्ग ।
एव पेगे महावीरा विपरक्कमन्ति,
पासह एगे अवमायमाणे अणत्त-पत्ते ।
(२) से वेमि से जहा वि कुम्भे हरणं विनिविट्ठ-चित्ते
पच्छन्न-पलासे उम्मुग्ग से नो लभइ ।
भज्जगा इव मत्तिवत्त नो चयन्ति,
एव पेगे अणेग-रूवेहिं कुलेहिं जाया
रूवेहिं सत्ता कट्ठण थणन्ति,
नियाणओ ते न लभन्ति मोक्ख ।
अह पास तेहिं कुलेहिं आयत्ताण जाया
१. गण्डी अट्टु वा कौट्टी रायसी, अवमारिय
काणिय सिम्मिय चैव कुणिय खुज्जिय तथा,
२. उयारिं च पास मुत्तिं च मूणियं च गिलासिणं
वेवय पीढ-सप्पिं च मिलिवइ मट्टु मेहिण—
३. सोलस एए रोगा अक्खाया अणुपुव्वमो ।
अह ण फुसन्ति आयका फासा य अममज्जमा ।
४. मरण तेसिं सोपेहाए उववाय चवण च नत्त्वा
परिपाग च सोपेहाए त सुणेह जहा तथा ।
(३) सन्ति पाणा अथा तमासि वियाहिया ।
तामेव सइमसइमइयच्च उच्चावाए फासे पडिसवेएइ ।
बुद्धेहे'य पवेइय ।
(४) सन्ति पाणा वासगा रसगा उदए उदय-चरा आगस-गाभिणी—
पाणा पाणे किलेसन्ति . पास लोए मइब्भय ।
बहु-दुक्खा हु जन्तवो : सत्ता कामेहिं माणवा ।

अवहेण वह गच्छन्ति सरीरेण पभगुरेण;
 अष्टे से बहु-दुक्खे इती बाले पकुब्बइ;
 एए रोगे बह नच्चा आउरा पस्थिावए ।
 “ नाल पास ”—अल तवे'एहिं !
 एय पास, मुणी, महब्भय, नाइवाएज्ज कचण ।
 आयाण मो सुस्स भो !

5

धूय वायं पवेणस्तामि ।
 (५) इह खलु अत्तत्ताण तेहि-तेहि कुेहिं अभिसेणण अभिसभूया अभिसजाया
 अभिनिव्वट्ठा अभिसवुट्ठा अभिसवुट्ठा अभिनिक्खन्ता अणुपुव्वेण महगुणी । त
 परक्कमन्त परिदेवमाणा
 “ मा णे चयाहि ” इति ते वयन्ति;
 10

(६) छन्दोवणीया अञ्जोववन्ता
 अक्कन्द-कारी जणगा रुयन्ति ।
 अतारिसे मुणी ओहतरए, जणगा जेण विप्पजट्ठा; सरण तत्थ नो समेइ । किह नाम
 से तत्थ रमइ ? एय नाण सया समणुवासेज्जासि ति—बोमि ॥
 15

६-२

(१) आउर लोग मायाए
 चइत्ता पुव्व-सजोग
 हिच्चा उवसम
 वसिता बम्भचेरसि
 बसु वा अणुवसु वा
 जाणित्तु धम्म जहा-तहा
 अहे'गे तमच्चाई
 20

कुंसीला वत्थ पडिग्गह कम्बलं पाय-पुञ्जण विओसिज्जा अणुपुव्वेण अणहियासेमाणा
 परिसिहे दुरहियासए । कामे ममायमाणस्स इयार्णि वा सुहुत्ते वा अपरि-माणाए भेओ एव से
 अन्तराहएहिं कामेहिं आकेवल्लि'एहिं; अविइण्णा चे'ए ।
 25

(२) अहे'गे धम्ममायाए—
 आयाण-भमिइ-सुप्पणिहिं चरे अपलीयमाणे ददे;
 सव्व गोहिं परिन्नाय एस पणए महा-मुणी,
 अइयच्च सव्वओ सग
 ' न मह अत्थी ' ति । इति ' एगो अहमासि ' जयमाणे
 एत्थ विरए अणगारे सव्वओ सुण्ढे रीयए ।
 जे अच्चेले परिवुसिए सच्चिक्खइ ओमोयरियाए, से
 30

अक्कुडे व हए व त्दसिए वा
 पलिय-प्पगन्थे अदु वा पगन्थे अतहेहिं
 सह-फासेहिं । इति सखाए एगयरे अन्नयरे
 अभिन्नाय तिइक्खमाणे परिव्वए ।

5 जे य हिरी । जे उ अहिरीमाणे
 चेच्चा सव्व विसोत्तिय सफासे फासे समिय-दसणे ।
 (३) एए भो नगिणा वुत्ता, जे लोगसि अणागमण-धम्मिणो
 आणाए मामगं धम्म, एस उत्तर-वाए इह माणवाण वियाहिए ।
 एत्थोवरए त क्षोसमाणे

10 आयाणिज्जं परिन्नाय परियाएण विगिच्चइ ।
 इहमेगेसि एग-चरिया होइ । तत्थि'यरा-इयरोहि कुलेहिं सुद्वे'सणाए सव्वे'सणाए
 से मेहावी परिव्वए;
 सुब्बि वा अदु वा दुब्बि अदु वा तत्थ भेरवा'
 'पाणा पाणे किलेसन्ति' । ते फासे 'पुट्टो वीरे'हियासएज्जासि'—त्ति वेमि ॥

६-३

15 (१) एय खु, मुणी, आयाण ।
 'सया सुअक्खाय-धम्मे,' 'विधूय-कप्पे निज्झोमइत्ता' । जे अचले परिवुत्तिए, तस्स णं
 भिक्खुस्स नो एव भवइ. 'परिजुण्णे मे वन्थे; वन्थ जाइस्सामि, मुत्त जाइस्सामि, सुइ जाइस्सा-
 मि, सधिस्सामि, सिव्विस्सामि, उक्कामिस्सामि, वुक्कामिस्सामि, परिहिस्सामि,
 पात्तणिस्सामि' । (२) अदु वा तत्थ परक्कमन्त भुज्जो अचेल तण-फासा कुसन्ति, सीय-फा०
 20 फु०, तेओ-फा० फु०, दंसमसग-फा० फु०—एगयरे अन्नयरे विरूव-रूवे फासे अहियासेइ अचले
 लाघवमागमणीणे तवे से अभिसमन्नागए भवइ जहे 'य भगवया पवेइय, तमेव अभिसमेच्चा
 सव्वओ सव्वयाए समत्तमेव समभिजाणिया ।

एव तेसि महा-वीराण चिर-राय पुव्वाइ वासाइ रीय-माणाण दवियाण
 पात्त'हियासिय;

25 आगय-पन्नाणार्णं किंसा वाहा भवन्ति पयणुए य मत्त-सोणिए ।
 विस्सेणी-कट्टु परिन्नाय एस तिण्णे मुत्ते विरए वियाहिए.—त्ति वेमि ।
 (३) विरयं भिक्खु रीयन्त चिर-राओसिय अरई तत्थ किं विधारए ?
 सधेमाणे समुट्टिए;

जहा ने दीवे असदीणे एव से धम्मे आरिय-देसिए ।

30 ते अणवक्खमाणा अणइवाएमाणा दइया मेहाविणो पण्डिया । एवं तेसि भगवओ अणु-
 ट्ठाणे । जहा से दिया-पोए, एव ते
 सिस्सा दिया य राओ य अणुपुव्वेण बाइय—सि वेमि ॥

६-४

(१) एवं ते ' सिस्ता दिया य राजो य अणुपुब्बेण बाइया ' तेहि महावीरेहि पत्ता-
णमन्तेहि, तेस'न्तिए पत्ताण उवलब्भ हिच्चा उवसम फारुसिब समाइयन्ति, ' वसिता बम्भ-
चेरसि ' आण ' तं नो ' ति मत्तमाणा आघाय तु सोच्चा निसम्म ' क्षमणुत्ता जीविस्तामो '
एगे निक्खम्म ते

असभवन्ता विडज्जमाणा 6

कामेहिं गिद्धा अज्जेववत्ता

समाहिमाघायमझोसयन्ता

सत्थारमेव फरुस वयन्ति ।

सीलमन्ता उवसन्ता सखाए रीयमाणा

' असीला ' अणुवयमाणस्स विइया मन्दस्स बालिया । 10

नियट्टमाणा वे'गे आथार-भोयरमाइक्खन्ति:

नाण-ब्भट्टा दसण-रुसिणो नममाणा एगे जीविबय विप्परिणामेन्ति;

पुट्टा वे'गे नियट्टन्ति जीविबयस्सेव कारणा ।

निक्खन्त पि तेसि दुण्णिक्खन्त भवइ । (२) ' बाला-वयण्णिज्जा हु ते नरा;
पुणो-पुणो जाइ पगप्पेन्ति ' । 15

अहे' समवन्ता विदायमाणा

" अहमसीति " विउक्कसे, उदासिणे ' फरुस वयन्ति ' पलियप्पगन्थे अनु वा पगन्थे
अतहेहि त मेहावी जाणेज्जा धम्म । अहमट्टी " तुम मि नाम बाले ", आरम्भट्टी अणुवयमाणे
" हण पाणे ! " घायमाणे हणओ यावि समणुजाणमाणे

" घोरे धम्मे उर्दारिए ! " 20

उवेहइ ण अणाणाए, एस विसण्णे वितण्डे वियाहिए-ति बेमि ।

(३) ' किमणेण भो जणेण करिस्तामि ? '

ति मत्तमाणा एव पे'गे विइत्ता ।

मायर पियर हेच्चा नायओ य परिगाह

वीरायमाणे ससुट्टाए 25

अविहिसे सुब्बए दन्ते पाम दीणे उप्पहए पडिवयमाणे ।

वसट्टा कायरा जणा लूसगा भवन्ति ।

अहमेगेसि सिलोए पावए भवइ: " से समण-विब्भन्ते, से समण-विब्भन्ते ! "
वे'गे समजागएहि असमजागए, नममाणेहि अनममाणे, विरएहि अविरए,
विएहि अदविए । अभिसमेच्चा पण्डिए मेहावी 30

निट्ठियट्टे वीरे आगमेण सया परक्कमेज्जासि-ति बेमि ॥

६-५

(१) से गिहसु वा गिहन्तरेसु वा गामेसु वा गामन्तरेसु वा नगरेसु वा नगरन्तरेसु

वा जणवएसु वा जणवयन्तरेसु वा सन्ते'गइया ' जणा लूतगा भवन्ति, ' अदु वा कासा फुसन्ति ते फासे ' पुट्टो बीरो'दियासए ' ।

(२) ओए समिय-दसणे

दय लोगस्त जाणित्ता

5 पाईण पढीण दाहिण उदाण

आइक्खे विभए किट्टे वेयवी;

से उट्टिएसु वा अणुट्टिएसु वा सुस्तुसमाणेसु पवेयए (३) सन्ति विरइ उवसमं निब्बाणं सोय अज्जविय महुविय लाघविय अणइ-वत्तिय; सव्वेसि पाणाण सव्वेसि भूयाण सव्वेसि जीवाणं सव्वेसि सत्ताण अणुवीइ भिक्खु धम्ममाइक्खेज्जा । (४) अणुवीइ भिक्खु-धम्ममा इक्ख-10माणे नो अत्ताण आसाएज्जा नो पर आसाएज्जा, नो अन्नाइ पाणाइ भूयाइ जीवाइ सत्ताइ आसाएज्जा से अणासायए अणासायमीणे ।

वज्झमाणण पाणाण

भूयाण जीवाण सत्ताण ' जहा से दीवे असदीणे ' एव

से भवइ सरण महा-मुणी ।

15 (५) एव से उट्टिए ठियप्पा

अनिहे अचले चले अबहि-लेसे परिव्वए ।

सखाय पेसल धम्म दिट्ठिम परिणिव्वुडे ।

तम्हा सग ति पासहा ।

गन्थेहि गट्ठिया नरा, विसण्णा काम-विट्ठिया ।

20 तम्हा लहाओ नो परिवित्तसेज्जा, जस्सि'भे आरम्भा सव्वओ सव्वयाए सुपरिक्खाया भवन्ति, जोसि'भे दसिणो नो परिवित्तसन्ति । से वन्ता कोइ च माण च माय च लोभ च

एस तिउट्टे वियाहिए-त्ति बोमि ।

(६) कायस्त विओवाए एस सगाम-ससि वियाहिए ।

25

से हु पारगमे मुणी ।

अविहम्ममाणे फलगावयट्ठी

कालोवणीए क्खेज्ज काल जाव मरीर-भेओ-त्ति वेमि ॥

‘ महापरिन्ना ’ नाम सप्तममध्ययनं विनष्टमिति
प्राचीनः प्रवादः श्रूयते ।

वि मो हो

८-१

(१) ते बेमि : समणुजस्स वा असमणुजस्स वा असणं वा पाणं वा खाइम वा साइमं वा वत्थं वा पडिमाह वा कम्बल वा पाय-पुञ्छण वा नो पाएज्जा नो निमन्तेज्जा, नो कुज्जा वेवावडिय परं आढायमीणे-ति बेमि ।

(२) धुव वेय जाणेज्जा असण वा जाव पाय-पुञ्छण वा लभिय नो लभिय, भुञ्जिय नो मुञ्जिय-पन्थ विवत्तण विउकम्म विभत्त धम्म शोसेमाणे समेमाणे पाएज्जा निम-५ न्तेज्जा, कुज्जा वेवावडिय परं अणाढायमीणे-ति बेमि ।

(३) इहमेगेसिं आचार-गोयेरे नो सुनिसन्ते भवइ । ते इह आरम्भडी, अणुवयमाणा . “ इण पाणे ! ” भायमीणा हणओ यावि समणुजाणमीणा, अदु वा अदिज्जाइयन्ति अदु वा वायाओ विउज्जन्ति, त-जहा -अत्थि लोए, नत्थि लोए; धुवे लोए, अधुवे लोए; साइए लोए, अणाइए लोए; स-पज्जवसिए लोए, अपज्जवसिए लोए; ‘ सुकडे ’ ति वा ‘ दुकडे ’ 10 ति वा, ‘ कल्लाणे ’ ति वा ‘ पावए ’ ति वा, ‘ साहु ’ ति वा ‘ असाहु ’ ति वा, ‘ सिद्धि ’ ति वा ‘ असिद्धि ’ ति वा, ‘ निरए ’ ति वा ‘ अनिरए ’ ति वा । जमिणं विप्पडिवज्जा मामग धम्म पन्नवेमाणाः एत्थ वि जाणेइ ‘ अकम्मात् ’ । एव तेसिं नो सुय-स्साए नो सुपज्जते धम्मे भवइ-से जहेय भगवया पवेइय आसु-पन्नेण जाणया पासया-अदु वा पुवी वओ-गोयरस्स-ति बेमि । 15

(४) सन्वथ्य सम्मय पाव; तमेव उवाइकम्म एत्त मह विवेगे वियाहिए ।

गामे वा अदु वा रण्णे

नेव गामे नेव रण्णे

धम्ममायाणह पवेइय माहणेण मईमया

जामा तिण्णि उदाहिया, जेसु इमे आरिया सम्बुज्जमाणा समुट्टिया । 20

जे निब्बुडा पावेहिं कम्मेहिं अनियाणा ते वियाहिया ।

उड्डु अह तिरिय दिसासु

सन्वओ सन्वावन्ती च ण पडिक जीवेहिं कम्म समारम्भेण-त परिन्नाय मेहावी नेव सय एएहिं काएहिं दण्ड समारभेज्जा, नेव'नेहिं एएहिं काएहिं दण्ड समारम्भावेज्जा, ने'वने एएहिं काएहिं दण्ड समारम्भन्ते वि समणुजाणेज्जा । जे व'ने एएहिं काएहिं दण्ड समारभन्ति, तेसिं पि वय 25 लज्जामो । त परिन्नाय मेहावी त वा दण्ड अन्न वा दण्ड-

नो दण्ड-भी दण्ड समारभेज्जासि-ति बेमि ॥

८-२

(१) से भिक्खू परकमेज्ज वा चिट्ठेज्ज वा निसिएज्ज वा तुयट्ठेज्ज वा सुसाणांसि वा मुत्तागारसि वा गिरि-गुहसि वा रुक्ख-मूलासि वा कुम्भाराययणासि वा हुरत्था वा । काहींचि विह-

रमाण त भिक्खु उवसकमित्तु गाहावई बूया.—“ आउसन्तो समणा ! अह खलु तव अट्टाए असण वा ४ वत्थं वा ४ पाणाइ ४ समाख्ख समुद्दिस्त कीय पामिअ अच्छेज्जं अनिसद्धं अभिहड आहडु चेएमि, आवसह वा समुस्सिणामि, से मुज्जह वसह, (२) आउसन्तो समणा !” भिक्खु तं गाहावह समणस सवयस पडियाइक्खे —“ आवसन्तो गाहावह ! नो खलु ते वयणं ५ आढामि, नो खलु ते वयण परिजाणामि, जो तुम मम अट्टाए असण वा ४ वत्थ वा ४ पाणाइ ४ समाख्ख... आहडु चेएसि, आवसह वा समुस्सिणामि । से विरओ, आउसो, गाहावई एयस्ताकरणयाए ” ।

(३) से भिक्खू परकमेज्ज वा जाव हुरत्था वा . गाहावई आयगयाए पेहाए असण... आहडु चेएइ, आवसह वा समुस्सिणाइ, भिक्खु त परिधासेउ । तं च भिक्खू जाणेज्जा 10 सह-सम्मुइयाए परवागरणेण अजेमि वा अन्तिए सोखा ‘ अय खलु गाहावई मम अट्टाए असण.. समुस्सिणाइ’ । तं च भिक्खू पडिलेहाए आगमेत्ता आणवेज्जा अणसेवणाए—सि वेमि ।

(४) भिक्खु च खलु पुट्टा वा अपुट्टा वा—जे इमे आहव्व गन्था फुसन्ति: “से इन्ता, हणह खणह छिन्दह दहह पयह आउम्पह विलुम्पट सहस कारेह विप्परामुसह !” ते फासे ‘ पुट्टे वीरो अहियासए ’ ।

15 अदु वा आयार-गोयर आइक्खे तक्किया णमणेसिस,

अदु वा वइ-गुत्तीए

गोयरस्स अणुपुब्बेण सम्म पडिलेहाए आय गुते ।

‘ बुद्धेहे’य पवेइय ’ ।

स समणुत्ते असमणुत्तम्म असण वा . (यथा २७, १-३.) . पर आढायमीणाए—सि वेमि ।

20 (५) ‘ धम्ममायाणह पवेइय माहणेण मईमया ’ । समणुत्ते समणुत्तस्स असण वा . (यथा २७, १-३ नवर नो न णणीय) ... पर आढायमीणाए सि वेमि ॥

८-३

(१) मज्जिमेण वयसा वि ण्णे सम्मुज्जमाणा समुट्टिया

सोखा वाई मेहावाणि पण्डियाण निसामिया ।

सामियाए धम्मे आरिएहि पवेइए ते अणवक्खमाणा अणइवाएमाणा अपरिग्गहमीणा नो 25 परिग्गहावन्ती । सव्वावन्ती च ण लोसि—

निहया दण्ड पाणेहि पाव कम्म अनुव्वमाणे एसमह अगन्थे वियाहिए ।

(२) ओए जुइमस्स खेयत्ते उववाय चवण च नच्चा;

आहारोवचया देहा परीसह-पमगुरा ।

पासहे’गे सच्चिन्दिणहं परिगिलायमाणेहि ओए; दय दयइ जे सनिहाण-सत्थस्स 30 खेयत्ते । से भिक्खू कालने बलने मायत्ते खणने विणयत्ते समयत्ते ‘ परिग्गह अममायमणि ’ काले’णुट्टाई अपडिन्ने दुहओ ‘ छिता नियाइ ’ ।

(३) तं भिक्खु सीयफास-परिवेवमाण-गाव उवसकमित्तु गाहावई बूया.—“ आउसन्तो समणा ! नो खलु ते गाम-धम्मा उब्बाहन्ति ? ” “ आउसन्तो गाहावई ! नो खलु मे

गाम-धम्मा उक्त्वाइत्ति, सीय-कातं च नो खलु अह सचाएमि अहियासेत्तए । नो खलु मे कप्पइ अगणि-कायं उज्जालेत्तए वा पज्जालेत्तए वा, काय आयावेत्तए वा पयावेत्तए वा, अत्तेसि वा बयणाओ ” । सिया से'व वयन्तस्स परो अगणि-काय उज्जालेत्ता काय आयावेज्जा वा पयावेज्जा वा । त च भिक्खू पडिलेहाए आगमेत्ता आणवेज्जा अणासेवणाए—सि वेमि ॥

८-४

(१) जे भिक्खू तिहिं वत्थेहिं परिवुसिए पाय-चउत्थेहिं, तस्स ण नो एव भवइ . ६
‘ चउत्थ वत्थ जाइस्सामि ’ । से अहेसणिज्जाइ वत्थाइ जाएज्जा, अहा-परिगहियाइं वत्थाइ धारेज्जा, नो घोवेज्जा नो रएज्जा, नो धोय-रत्ताइ वत्थाइ धारेज्जा, अपलिउच्छमाणे गामन्तरेसु ओमत्तेलिए । एय खु वत्थ-धारिस्स सामगिय । अह पुण एव जाणेज्जा : ‘ उवा-इकन्ते खलु हेमन्ते, गिम्हे पडिवत्ते, ’ अहा-परिजुण्णाइ वत्थाइ परिट्टेज्जा, अहा-परिजुण्णाइं वत्थाइं परिठवेत्ता अदु वा सन्तरुत्तरे अदु वा ओमत्तेलिए अदु वा एग-साडे अदु वा अत्तेले 10
लाघविय आगममीणे तवे से अभिसमन्नागण भवइ । जहे'य भगवया पवेइव तमेव अभिसमे-
त्त्वा सव्वओ सव्वयाए समत्तमेव समभिजाणिया ।

(२) जस्स ण भिक्खुस्स एव भवइ . ‘ पुट्ठो खलु अहमसि, नाल अहमसि सीव-
फास अहियासेत्तए ’—से वसुम सव्व-समन्नागय-पन्नाणेण अप्पाणेण केइ अकरणाए आउट्टे,
तवस्सिणो हु त सेय ज सेगे विइमाइए । 15
तत्थावि तस्स काल-परियाए, से वि तत्थ वियन्त-कारए ।
इत्थेय विमोहाययण हिय मुह खम निस्सेस आणुगामिव—ति वेमि ॥

८-५

(१) जे भिक्खू दोहि वत्थेहिं परिवुसिए पाय-तइण्हिं, तस्स ण नो एव भवइ :
तइय वत्थ जाइस्सामि ’ । से अहेसणिज्जाइ वत्थाइ जाएज्जा ... (यथा ६-१३,
भवर अदु वा सन्तरुत्तरे पाठो वर्जनिय , तथा वत्थधारिस्स स्थाने तस्स भिक्खुस्स पाठ पठनीय) 20
.... एव भवइ . ‘ पुट्ठो अबलो अहमसि, नालमहमसि गिहन्तर-सकमण भिक्खायरिय गम-
णाए, ’ (२) से एव चवन्तस्स परो अभिहउ असण वा ४ आइहु इलएज्जा; से पुव्वामेव
आलोएज्जा “ आउसन्तो गाहावई । नो खलु मे कप्पइ अभिहडे असणे वा ४ भोत्तए वा
पायए वा अत्ते वा तहप्पगारे ” ।

(३) जस्स ण भिक्खुस्स अय पगप्पे —‘ अह च खलु पडिन्नतो अपडिन्नतोहिं, 25
गिलाणो अगिलाणोहिं अभिक्ख-साहम्मिएहिं कीरमाण वेयावडिय साइज्जिस्सामि, अह चावि
खलु अपडिन्नतो पडिन्नतस्स अगिलाणो गिलाणस्स अभिक्ख-साहम्मियस्स कुज्जा वेयावडिय
करणाए : (४) ’ आइहु परिज आनक्खेस्सामि आइह च साइज्जिस्सामि, ’ आ० प० आ०
आ० च नो सा०, ’ आ० प० नो० आ० आ० च सा०, ’ आ० ० नो आ० आ० च

नो ता०, '—एव से अहा-किट्टियमेव धम्म समाभिजाणमाणे सत्ते विरए सुसमाहिय-ळेस्से ।
तत्थावि (यथा २९, १९.) ... आणुगामिय—ति वेमि ॥

८-६

(१) जे भिक्खू एगेण वत्थेण परिवुसिए पाय-विइएण, तस्स नो एवं भवइ :
' विइय वत्थ जाइस्सामि ' । से अहेसणिज्ज वत्थ जाएज्जा (यथा २९, ९-१३ नवरं
५ जुण्णइ वत्थाइ स्थाने जुण्णं वत्थं पठनीयं, अपलि० गाम० ओम०, तथा अदु वा सन्तदत्तरे अदु
वा ओमचेलय वनेनीयं, तथैव वत्थधारिस्स स्थाने तस्स भिक्खुस्स भणनीयं) एव मवई :
' एगो अहमसि ; न मे अत्थि कोइ न याहमवि कस्तइ, ' एव स एगाणियमेव अप्पाणं
समभिजाणेज्जा ; लाघविय (यथा २९, ११.) ... समभिजाणिया ।

(२) से भिक्खू वा भिक्खुणी वा असण वा ४ आहारेमाणे नो वामाओ हणु-
१० याओ दाहिण हणुय सचारेज्जा आसाएमाणे, दाहिणाओ वा हणुवाओ वामं
हणुय नो सचारेज्जा आसाएमाणे । से अणासायमाणे लाघविय (यथा २९, ११.) ...
समभिजाणिया ।

(३) जस्स ण भिक्खुस्स एव भवइ ' से गिलामी च खल्ल अह इमम्मि समए
इमं सरीस्य अणुपुब्बेण परिवहितए, ' से अणुपुब्बेण आहारं सवट्टेज्जा, अणुपुब्बेण आहारं
१५ सवट्टेत्ता ' कत्ताए पयणुए किच्चा ' ।

समाहियच्चे फलगावयट्ठी

उट्ठाय भिक्खू अभिनिव्वुट्ठच्चे

(४) अणुपविसिता गाम वा नगर वा खेड वा कब्बड वा मट्ठम वा पट्ठणं वा
दोण-मुह वा आगर वा आसम वा सन्निवेस वा निगम वा रायहाणिं वा तणाइ जाएज्जा, तणाइ
२० जाइत्ता से तमायाए एगन्तमवक्कमेज्जा, एगन्तमवक्कमित्ता अप्पण्डे अप्प-पाणे अप्प-बीए अप्प-हरिए
अप्पोसे अप्पुदए अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मकढा-सन्ताणए पडिलेहिय २ पमज्जिय २ तणाइ
सन्धरेज्जा, तणाइ सन्धरेत्ता एत्थं वि समण इत्तिरियं कुज्जा ।

(५) त सच्च . सच्चा-वाई ओए तिण्णे छिन्न-कहकहे

आईयट्टे आणारिए चेच्चाण भेउर काय

२५ संविहुणिय विरूव-रूवे परीसहोवसग्गे अस्सि विस्सम्भणयाए भेरवमणुत्तिण्णे । तत्थावि
(यथा २९, १९) आणुगामिय '—ति वेमि ॥

८-७

(१) जे भिक्खू अचेले परिवुसिए, तस्स ण एव भवइ ' चाएमि अह तण-फास
अहियासेतए, सीय- फा० अ०, तेओ-फा० अ०, दस-मसम-फा० अ०, एगयरे अन्नयरे विरूव-
रूवे फासे अहियासेतए; हिरिपडिच्चावण च'ह नो सचाएमि अहियासेतए, ' एव से कप्पइ
३ कदिनन्धणं धारेतए । अदु वा तत्थ परक्कमन्त भुज्जो अचेले तण-फासा फुसन्ति, सीय- फा०
फु०, तेओ-फा० फु०, दसमसम-फा० फु०, एगयरे अन्नयरे विरूव-रूवे फासे अहियासेर ।
अचेले लाघविय (यथा २९, ११) समभिजाणिया ।

(२) 'जस्त ण भिक्खुस्त एव भवइ : 'अह च खल्ल अन्नोसि भिक्खुणं असण वा षु आइदु दलइस्सामि आइदं च साइज्जिस्सामि, 'जस्त....द० आ० च नो सा०, 'जस्त ...नो द० आ० च सा०, 'जस्त....नो द० आ० च नो सा०, (३) अहं च खल्ल तेण अहाइरित्तेण अहेसणिज्जेण अहा-परिगहिएण असणेण वा षु अभिकंख साहाम्भियस्स कुज्जा वेयावडियं करणाए, अह चावि तेण . साहम्भिएहि कीरमाण वेयावडियं साइज्जिस्सामि '— ६
(३) लाघविय... (यथा २९, ११)....समभिजाणिया ।

(४) जस्त ण भिक्खुस्त एव भवइ ' से गिलामी~....(यथा ३०, १३-२२.).... समए काय च जोग च इरिय च पच्चकखाएज्जा । त च सच्च....(यथा ३०, २३-२६.).... आणुगामिय—ति वेमि ॥

८-८

- | | | |
|-----|---|----|
| १. | अणुपुब्बेण विमोहाइ जाइ धीरा समासज्ज वसुमन्तो मइमन्तो सव्व नच्चा अणेत्तिस | 10 |
| २. | दुविह पि विइत्ताण बुद्धा धम्मस्स पारगा अणुपुब्बीए सखाए कम्मणाओ तिउट्टइ । | |
| ३. | कसाए पयणुए किच्चा अप्पाहारो तिइक्खए; अह भिक्खू गिलाएज्जा आहारस्सेव अन्तिय, | 15 |
| ४. | जीविय नाभिकखेज्जा मरण नो वि पत्थए. दुइओ वि न सज्जेज्जा जीविए मरणे तथा । | |
| ५. | मज्जात्थो निज्जरा-पेही समाहिमणुपालए; अन्तो बहिं विओसज्ज अज्जात्थ सुद्धमेसए । | |
| ६. | ज किंचुवक्कम जाणे आउक्खेमस्समप्पणो, तस्सेव अन्तरद्वाए सिप्प सिक्खेज्ज पण्डिए । | २० |
| ७. | गामे वा अदु वा रण्णे थण्डिल पडिलेहिया अप्प-पाण तु विन्नाय तणाइ सन्थरे मुणी । | |
| ८. | अणाहारो तुयट्टेज्जा, पुट्टो तत्थ'हियासए, नाइवेल उवचरे माणुस्सेहीं वि पुट्टव । | २५ |
| ९. | ससप्पगा य जे पाणा जे य उट्टमहेचरा भुज्जन्ते मस-सोणाय न छणे न पमज्जए । | |
| १०. | पाणा देइ विहिंसन्ति—ठाणाओ न विउब्भमे, आसवोहिं विचित्तेहिं तिप्पमाणो'हियासए । | |
| ११. | गन्थोहिं विचित्तेहिं आउ-कालस्स पारए; पग्गहीयतर नेय दवियस्स वियाणओ : | ३० |
| १२. | अय से अवरे धम्मे नायपुत्तेण साहिए . | |

- आय-वज्र पडीयार विजहेज्जा तिहा-तिहा ।
 १३. हरिएसु न निवजेज्जा, थण्डिल मुणिया सए,
 विभासेज्ज अणाहारो पुट्ठो तत्थ'हियासए ।
 १४. इन्दिएहिं गिलायन्तो सभियमाहरे मुणी,
 तहावि से अगरहे अचळे जे समाहिए ।
 १५. अपकमे पडिकमे सकुचए पसारए
 काय-साहारणट्टाए एत्थ वा वि अचेयेण ।
 १६. परिकमे परिकिलन्ते अदु वा चिट्ठे अहा-यए,
 ठाणेण परिकिलन्ते निसिएज्जा य अन्तसो;
 १७. आसणि'णेलिस मरण इन्दियाणि समीरए ।
 कोला'वास समासज्ज वितह पादुरेसए,
 १८. जओ वज्र समुप्पज्जे न तत्थ अवलम्बए,
 तओ उक्कसे' अप्पाण, सन्वे फासे'हियासए ।
 १९. अय चाययतरे सिया जो एव अणुपालए
 सव्वगाय-निरोभे वि ठाणाओ न विउब्भमे
 २०. अय से उत्तमे घम्मे पुव्वट्टाणस्स पग्गहे ।
 अचिर पडिलेहिता विहरे चिट्ठो माहणे,
 २१. अचित्त तु समासज्ज ठावए तत्थ अप्पग,
 वोसिरे सव्वसो काय ' न मे देहे परीसहा ' ।
 २२. जावज्जीव परीसहा उवसग्गा य सस्साय
 सवुद्धे देह-भेयाए इति पत्ते'हियामए ।
 २३. भेउरेसु न रज्जेज्जा कामेसु बहुयरेसु वि,
 इच्छा-लोभ न सेवेज्जा धुव वण्ण संपेहिया,
 २४. ' सासणहिं ' निमन्तेज्जा— दिव्व माय न मदहे ।
 त पडिबुज्ज माहणे सव्व नूम विहणिया ।
 २५. सव्वट्टेहिं अमुच्छिए आउ-कालस्स पारए;
 तिइक्ख परम नच्चा विमोहनयर हिय—ति वेमि ॥

उ व हा ण सु यं

९-१

१. अहा-सुय वइस्सामि जहा से समणे भगव उट्ठाय
सखाएँ तासि हेमन्त अहुणा-पञ्चाइए रीइथा ।
२. 'नो चेवि'मेण वन्थेण पीहिस्सामि तसि हेमन्ते—'
से पारएँ आवकहाए, एय खु अणुयम्मिय तस्स ।
३. चत्तारि साहिण मासे बहवे पाण-जाइयागम्म
आभिरुज्झ काय विहरिंसु, अरुसियाण तन्थ हिंसिंसु ।
४. सवच्छर साहिय मास ज न रिक्कांसि वन्थग भगव,
अचेलेए तओ चार्ह त वोसज्ज वन्थमणगारे ।
५. अदु पोरिसिं तिरिय-मितिं चक्खुमासज्ज अन्तेसो ज्ञाह ;
अह चक्खु-भाय-सहिया ते " हन्ता हन्ता " बहवे कन्दिंसु ।
६. सयणेहिं बीइमिस्सेहि इत्थिओ तन्थ ते परिन्नाया ;
सागारिय न से सेवे, इति से सय पवेसिया ज्ञाह ।
७. जे के'इमे अगारन्था, मीसी-भाव पहाय से ज्ञाह
पुट्ठो वि नामिभासिंसु, गच्छइ नाइवत्तर्ह अञ्जू ।
८. नो सुकरमेगेसिं नामिम.से अभिवायमीणे,
हय-पुण्वो तन्थ दण्डेहिं, लूसियपुण्वो अप्प-पुण्णेहिं ।
९. फरुसाइ दुत्तिदक्खाइ अइयचे मुर्णा परकममाणे
आघाय-नट्ट-गियाइ दण्ड जुज्जाइ मुट्ठि जुज्जाइ
१०. गट्टिए मिट्टु-कहासु समयम्मि नाइ-सुए विसोएँ अइक्खू ;
एयाइ सो उरालाइ गच्छइ नायपुत्ते असरणाए ।
११. अवि साहिण दुवे वासे सीओद अभोच्चा निक्खन्ते ;
एगत्त-गए पिहियच्चे से अभिन्नाय-दसणे सन्ते ।
१२. पुढावि च आउ-काय च तेउ काय च वाउ-काय च
पणगाइ बीय-हरियाइ तस-काय च सव्वसो नच्चा
१३. ' एयाइ सन्ति ' पडिलेहे ' चित्तमन्ताइ ' से अभिन्नाय
परिवज्जियाण विहरिन्था इति सखाएँ से महावीरे :
१४. ' अदु भावरा य तसत्ताए तसजीवा य थावत्ताए,
अदु सव्वजोगिया सत्ता, कम्मणा कप्पिया पुढो बाला ' ।

१५. भगव च एवमन्नेसी : ' सोवहि ए हु लुप्पई बाले ' ;
कम्म च सव्वसो नच्चा त पडियाइक्खं पावग भगव ।
१६. दुविह समेच्च मेहावी किरियमक्खाय'णोल्लस त्ताणी
आयाणसोयमइवाय-सोय जोग च सव्वसो नच्चा
१७. अइवत्तियमणाउट्टि समयन्नोनि अकरणयाए 5
जस्सि'त्थिओ परिन्नाया सव्वकम्मावहाओ अइक्खू ।
१८. अहा-कड न से सेवे, सव्वसो कम्मणा य अइक्खू
ज किञ्चि पावग, भगव त अकुव्व वियड मुञ्जित्था ।
१९. नासेवई य परवत्थ, पर-पाए वि से न मुञ्जित्था,
परिवज्जियाण ओमाण गच्छइ सखडि असरणाए । 10
२०. मायन्ने असण पाणस्स नाणुगिद्वे रसेसु अपडिन्ने;
अच्छि पि नो पमज्जिया, नो वि य कण्डूयए सुणी गाय ।
२१. अप्प तिरिय पेहाए अप्प पिट्ठओ व पेहाए
अप्प बुइए पडिभाणी पन्थ-पेही चरे जयमाणे ।
२२. तिसिरसि अद्ध-पडिवन्ने त वोसज्ज वन्थमणगारे 15
पसारसु नाहू परक्कमे नो अवलम्बियाण सन्धंसि ।
२३. एस विही अणुक्कन्तो माहणेण मईमया
बहुसो अपडिन्नेण भगवया एव रीयन्ते—त्ति बेमि ॥

९-२

१. चरियासणाइ मेज्जाओ एगइयाओ जाओ बुइयाओ,
आइक्ख ताइ सयणासणाइ जाइ मेवि थ से महा-वीरे । 0
२. आवेसण-सभा पवामु पणिय-सालायु एगया वासो
अदु वा पालिय-ट्ठाणेसु पलाल-पुञ्जेसु एगया वामो ।
३. आगन्तारे आरामागारे नगरे वि एगया वासो,
सुसोणे सुन्न-गारे वा रुक्ख मूले वि एगया वासो ।
४. एएहिं सुणी सयणेहिं समणे आसि प-त्तेलस चात्ते; 25
राइंदिय पि जयमाणे अप्पमत्ते समाहिंए छाइ;
५. निहं पि नो पगामाए सेवइ य भगव उट्ठाए;
जग्गवई य अप्पाण, ईमि साइयासी अपडिन्ने ।
६. सम्मुज्झमाणे पुनरावि आमिसु भगव उट्ठाए
निक्खम्मन एगया राओ वहिं चकमिया मुहुत्ताग । 30
७. सयणेहिं तस्सुवमग्गा नीमा आसी अणेग-रूवा य.
समप्पया य जे पाणा अदु वा पक्खिणो उवचरन्ति ।
८. अदु कुचरा उवचरन्ति गाम-रक्खा य सत्ति-इत्था य,

- अदु गामिया उवसग्गा इत्थी एगइया पुरिसो वा ।
९. इह-लोइयाइ पर-लोइयाइ भीमाइ अणेगरूवाइ,
अचि सुब्बिभ-दुब्बिभ-गन्धाइ सद्दाइ अणेग-रूवाइं
१०. महियासए सया समिए फासाइ विरूव-रूवाइ,
अरइ रइं च अभिभूय रीयई माहणे अबहु-वाइं ।
११. सयणेहिं तत्थ पुच्छिसु एग-चरा वि एगया राओ,
अव्वाहिण कसाइत्था; पेहमाणे समाहिं अपडिन्ने ।
१२. “ अयमन्तरसि; को एत्थ ? ” “ अहमसि ” ति “ भिक्खु ” आइहु
अयमुत्तमे से धम्मे तुत्तिणीएँ स कसाइण ज्ञाह ।
१३. जसि प्पेगे पवेवन्ति सिसिरे मारुण पवायन्ते
तसि प्पेगे अणगारा हिमवाण निवायमेसन्ति:
१४. ‘ सघाडीओ पविसिस्सामो, णहा य समादहमाणा
पिहिया वा सक्खामो; अइहुक्ख हिमग-सफासा ! ’
१५. तसि भगव अपडिन्ने अहे-वियडे अहियासए दविए,
निक्खम्म एगया राओ चाणइ भगव समियाए ।
१६. एस विही अणुक्कन्तो माहणेण मईमथा
बहुसो अपडिन्नेण भगवथा एव रीयन्ते ति बेमि ॥

९-३

१. तण-फास तीय फासे य तेओ-फासे य दस-मसए य
अहियासए सया समिए फासाइ विरूव-रूवाइ ।
२. अह दुच्चर लाड अचारी वज्ज-भूमिं च मुब्ब-भूमिं च,
पन्त सेज्ज सेविसु आसणगाइ चैव पन्ताः ।
३. लादेहिं तस्सुवसग्गा बहवे जाणवया लसिसु,
अइ लक्ख-देसिए भत्ते, कुक्कुरा तत्थ हिसिसु निवइसु ।
४. अप्पे जणे निवारैह लसणए सुणए डसमाणे,
‘ हुच्छुक् ’ कारेन्ति आहन्तु “ समण कुक्कुरा डसन्तु ” ति ।
५. एल्लिक्खण जणे भुज्जो बहवे वज्ज भूमिं परुसासी,
लट्ठि गहाय नालीय समणा तत्थ एव विहरिसु;
६. एव पि तत्थ विहरन्ता पुट्ट-पुव्वा अहेसि सुणणहिं,
सल्लञ्चमाणा सुणणहिं—दुच्चरमाणि तत्थ लादेहिं ।
७. निहाय दण्ड पाणेहिं त काथ बोसज्जेमणगोर
अह गाम-कण्टए, भगव ते अहियासए अभिसमेच्चा,
८. ‘ नाओ ’ सगाम-सीसे व पारए तत्थ से महावीरे ।

- एवं पि तत्थ लादेहिं अलद्ध-पुण्वो वि एगया गामो;
 ९. उवसकमन्तमपडिन्न गामन्तिय पि अप्पत्त
 पडिन्निकखमित्तु लूसिसु “ एयाओ पर पलेहि ! ” ति ।
 १०. हय-पुण्वो तत्थ दण्डेण अदु वा सुट्टिणा अदु फलेण
 अदु लेलुणा क्वाल्लेण ; “ हन्ता हन्ता ” बहवे कन्दिसु । 5
 मत्तुणि छिन्न-पुण्वाइ, ओट्टुभियाएँ एगया काय
 परिस्सहाइ लुद्धिसु अदु वा पसुणा उवकरिसु,
 १२. उच्चालइय निहणिसु अदु वा आसणाओँ खलइंसु—
 वोत्तट्ट-काएँ पणयात्तो दुक्ख-सहे भगव अपडिन्ने ।
 १३. सूरु सगामत्तोसे व सवुडे तत्थ मे महावीरे 10
 पडिस्सेवमाणोँ फरुसाइ अचले भगव रीइत्था ।
 १४. एस विहाँ अणुक्कन्तो माहणेण मईमया
 बहुत्तो अपडिन्नेण भगववया एव रीयन्ते—ति वेमि ॥

९-४

१. ओमोयरिय चाएरँ अपुट्टे वि भगव रोगेहिं;
 पुट्टो व से अपुट्टो वा नो से साइज्जइ तेइच्छ । 15
 २. संमोहण च वमण च गायळ्ळभण सिणाण च
 सवाहण न मे कप्पे दन्त-पक्खाल्लण परिन्नाए ।
 ३. विरण य गाम-धम्मोहिं रीयइ माहणे अबहु-वारँ,
 तिसिरम्मि एगया भगव छाय णँ ज्ञाइ आसी य ।
 ४. आयावई य गिम्हाण अच्छइ उक्कुट्टुण अभितावे,
 अदु जावइत्थ लूहेण ओयण-मन्थु-कुम्मासेण । 20
 ५. एयाणि तिण्णि पडिमेवे अट्ट मासे य जावण भगव,
 अपिइत्थ एगया भगव अट्ट-मासे अदु वा मास पि ।
 ६. अवि साहिण दुवे मासे छप्पि मासे अदु वा अपिक्किन्था,
 राज्जेविराय अपडिन्ने अन्न-गिल्लायमेगया भुञ्जे । 25
 ७. छट्टेणमेगया भुञ्जे अदु त्ता अट्टमेण दममेण,
 दुबालममेण एगया भुञ्जे पेदमाणे समारिं अपडिन्ने ।
 ८. नच्चण से महावीरे नो वि य पावग सयमकार्मा
 अत्तोहिं वा न कारेत्था कीरन्त पि नाणुजाणिन्था ।
 ९. गाम पविस्स नगर वा घाममेसे कइ परट्टाण
 सुविसुद्धमेसिया भगव आयय जोगयाणँ मेक्किन्था । 30
 १०. अदु वायसा दिग्गिच्छन्ता, जे अत्ते रसेसिणो सत्ता
 धासेसणाएँ चिट्ठन्ते सयय निवहण य पेहाण,

११. अदु माहणं व समण वा गाम-पिण्डोलगं व अहिं वा
सोवागो मूसियारिं वा कुक्कुर वा विविहं ठिय पुरओ,
१२. विसि-च्छेय बज्जन्तो तेस'प्पसियं परिहरन्तो
मन्द परक्कमे भगव, अहिंसमाणो घावमेसिस्था ।
6 १३. अवि सूइय व सुक्क वा सीय-पिण्ड पुराण कुम्मास
अदु बोक्कम पुलाग वा लद्धे पिण्डे अलद्धए दविए ।
१४. अवि ज्ञाह से महावीरे आसत्थे अकुक्कण ज्ञाण,
उड्डु अहे य तिरिय च लोपे ज्ञायह ममाहिमपडिन्ने ।
१५. अकासी विगय-गेही य सह-रुवेमु अमुच्छिए ज्ञाह
10 छउमत्थो वि परक्कममाणे न पमाय सहं पि कुवित्था ।
१६. सयमेव अभिसमागम्म आयय-जोगमाय-सोहीए
अभिनिव्वुद्धे अमाइल्ले आवकह भगव समियासी ।
१७. एम विही अणुक्कन्तो माहणेण मईमया ।
बहुमो अपडिन्नेण भगवया एव रीयन्ते—सि वेमि ॥

॥ समतो पढमो सुयक्खन्धो ॥

अकारादि-शब्दानुक्रमणिका



| | | |
|----------------------|---------------------------------|--|
| अ न | १ अट्टिण० अर्थेन, | अक्षत्य अन्यत्र |
| अहनुकस अतिदुःख | २ अट्टिण् अस्थिन | अक्षयर अन्यतर |
| अहमाण अतिमान | अट्टिय अधिक | अक्षहा अन्यथा |
| अहवसिय अतिवृत्तिक | १ अणु अणु, | अक्षोसिय अन्वेषिक |
| अहवार्थ अतिपातिक | २ अणु अणु | अप्य अल्प |
| अहवाय अनिपात | अणुगामं अनुग्रामम् | अप्यग आत्मक |
| अहविज्ज अतिविद्य | अणुगामिय अनुग्रामिक | अप्यण० आत्मन |
| अहविज्जं अतिविद्वान् | अणुट्टण० अनुस्वायिन् | अधमराण अभ्यङ्ग, -अभ्यजन |
| अहविण्ण अतिविज्ज | अणुट्टण अनुष्ठान | अभिधाव अभिनाप |
| अहवेल अतिवेल | अणुट्टिन्ना अनुट्टिण् | अभिवाय अभिवात |
| अहहि अतिधि | अणुधम्मिय अनुधम्मिक | अभिसाकिण० अभिसाङ्किन् |
| अहन्द् आकन्द | अणुपस्सिण्० अनुपस्सिन | अभिसंसेय अभिवेक |
| अगणि अग्नि | अणुपुच्च अनुपुर्ध | अमरायह अमरायत (अमर इवा करति) |
| अगार (गृह) | अणुवसु अनुवसु | |
| अग्ग अग्न | अणुवीह अनुविधि | अम्बिल आमन |
| अङ्गुलि — | अणुमवेयण अनुमवेदन | अयं (सर्वनाम) अय, अणेण, अ- स्स, अस्सि |
| अङ्गल अर्ज | अण्हय अण्हज | |
| अच्छायण आच्छादन | अत्तण० आत्मन् | अरहन्त्० अर्हन् |
| अच्छि अक्षि | अत्तत्त आत्मन्व | अरिह अर्ह |
| अज्जिण अजिन | अत्तत्ता आत्मना, -आत्मत्राण | अरिहर् अर्हन्ति |
| १ अज्ज अय, | अन्ध नय | अलङ्कग अलङ्कक |
| २ अज्ज आर्य | अन्धियण० अधिन | अर्ध अर्धान्त |
| अज्जव आग्नेव | अदु यद उ | अवचरुय अपचरिये |
| अज्जविया आग्नेवना | अदु वा यद उ वा, -यद वा, यदवा | अवम हीन |
| १ अज्जत्थ अन्यात्म | १ अद्व न वन् | अवमारिय अपस्मारिक |
| २ अज्जत्थ अध्वस्त | २ अद्व-अर्ध | अवययट्ठि अवययि |
| अज्जत्थिय अन्यात्मिक | अन्नराज्य अन्नराज्यिक | अवर अपर |
| अज्जत्थप अन्यात्म | अन्नस्सो अन्नग | अवस्सकिण० अपस्सकिन् |
| अट्ट अर्ति | अन्निय अन्निक | अवि आपे |
| १ अट्ट अर्थ | अन्तो अन्न | अम् (पादु) अस्मि, अस्मि, सम्मि, सिया, अस्मिया, आस्मि, सन्त, अणु- स्मि। |
| २ अट्ट अष्टन | अन्धत्त अन्धन्व | |
| अट्टम अष्टम | अन्ध अन्ध | |
| अट्टया अर्थना | | |

असण असन
अह् (धातु) आहु, उयाहु, आह्वय
 १ **अह्** अघ
 २ **अह्** अघस्
अहं (सर्वे०) अह, मे, मए, मम,
 महं, मे
अह्ना यथा
अह्निय अधिक
अहुणा अहुना
अह्ने अघस्
अहो अघस्
 १ **अहो** अहर
 २ **अहो** (आश्चर्ये)

आह् आदि
आह्य आदिक
आह्ये आदिक, -आ अनीत
 १ **आउ** आपस्
 २ **आउ** आपुस्
आउही आऊही
आउथ आयुक्क
आउर आतुर
आउरिय आतुरक
आउसन्त् आयु'मन्त्
आप्स आवेश
आप्सिण० आदेशिन्
आकस्मिन् आकस्मिन्
आकेवलिय आकेवलिक
आगह् आगति
आगन्तार प्रसङ्गायात्वा आगन्त्
 वा यत्र तिष्ठन्ति (व्याख्या)
आगमण आगमन
आगामिस्त आगामिन्
आगर आकर
आगास आकाश
आगवेत्तग आख्यापयितुक
आणन्द् आनन्द
आणा आह्ना
आणुगामिय आनुगामिक

आणुधर्मिय आनुधर्मिक
आप् (धातु) आयनर्, आत्तर,
 पत्त भपत्त, प'प
आम अपक
आय-या आत्मन्
आयग आत्मक
आयंक आतृक्क
आयत्त आत्मत्व
आययण आयतन
आयरिय आचार्य
आयवन्त् आत्मवन्त्
आयाण आदान
आयार आचार
आरम्भ (पापजनक प्रवृत्ति)
आराम —
आरिय आय, -आचार्य
आलह्य आलपिक
आलुम्प —
आलोभिण० आलोभिन्
आवकहा यावत्कथा
आवह् आवन
आवन्त० यावन्
आवसह् आवसथ
आवह् —
आवास —
आवसण आवेशन (शून्यगृह)
आस (धातु) आसप्तु, आसिप्तु,
 आसीग, उद.सीग
आस लाभा (प्रातराशौ इ)
आसंसा आसनो
आसण आसन
आसणा आसनक
आसम आश्रम
आसव आश्रव
आसा आशा
आसाथ आस्वाद
आसु आशु
आसेवणा आसेवना
आसेवण्या आसेवन्ता

आहश्च (आहल्य)
आहरण —
आह्राकृष्ट यथाकृत
आहार —
आहारग आहारक
इ (धातु) इति, उवेह्, एषा, अ-
 खद्, अइय, समेह्, समिय, समेष्वा,
 अभिसमेष्वा
इओ इतस्
इच्छ० इति (इच्छारथ=इत्यर्थे)
इच्छा —
इण (एण) इदमर्थक
इति (इच्छ०)
इत्तरिय { इत्वरक
इत्तरिय }
इन्धिया छिका
इन्धी स्त्री
इन्दिय इन्द्रिय
इम (सर्वनाम) इम, इमा, इमेण,
 इमस्स, इमस्मि, इमे, इमाओ
इय इति
इयर इतर
इथाणि इदामिन्
इरिया इया
इव, व इवाथक
 १ **इप** (धातु) एसे, एषन्ति, एस्प,
 एषित्था, एषिया, असेसन्ति, षि-
 न्ति, पाहुरेस्प, पाउडएस्प
 २ **इष** (धातु) इच्छसि, इच्छिषा-
 निच्छय
इसि ऋषि
इह् -(हं) इहार्थक
इश्च (धातु) उवेह्, उवेह्, उवे-
 हाइ, उवेहमाण, अणुवे०, अणुवे-
 हाए, उवेहा, समु'वेहमाण, समुवे-
 हमाण, पेहमाण, ० शीण; वेहाए,
 सेपेहाए-अपेह.ए, सेपेहिया
ईर्य (धातु) ईरिय, उदीरिय, स-
 मारए

| | | | |
|-------------------------------|---|-----------------------------|--------------------------------|
| शर्ल संश्र | | | |
| उ | उ | उवराय उपरात्र | एवं एवमर्थक |
| उक्कुडुक उरकुडुक | | उ (ओ) षचाइय औपपादि (ति)क | एस एय |
| उगघायण उद्घातन | | उववाय उपपात | एसग एवक |
| उष्ठा उरुचार्थक | | उवस (स्व) म्ग उपसर्ग | एसणा एषणा |
| उष्वाल्लक्ष्त्र- } उष्वालभित् | | उवसन्ति उपशान्ति | एसिण्० एषित् |
| उष्वाल्लक्ष्य } उष्वालयिक | | उवसम उपशम | एह एध |
| उष्वावय उष्वावच | | उवहाण उपधान | ओ वाक्यपूर्णार्थक |
| उजु-उज्जु कजु, वज्जु | | उवहि उपधि | ओग्गह अवग्रह |
| उज्जुकड, -डे कजुकुव, कजुकारी | | उवहिय उपधिक | ओह् ओष्ठ |
| उद्गाण्० उत्थापिन | | उवाय उपाय | ओम अवम-हीन |
| उद्ध ऊर्ध्व | | उवाहि उपाधि | ओभाण अवमान |
| उपह ऊप | | उवेहा उपेक्षा | ओय ओज |
| उत्तम - | | उव्वेग उद्रेग | ओयण ओदन |
| उत्तर - | | उसणिञ्ज उपणिय | ओयरिया ओदर्थ |
| उतासहत्तर० उत्त्रासथित् | | उसिण उग | ओसा अवस्था |
| उत्तिग - | | ऊरु - | ओ-वाइय आपपादि (ति)क |
| उद उदकार्थक | | ऊ (वायु) अरुल्लह | ओह ओध |
| उद्य उदक | | ए- (सर्वनाम) एहि | ओहाण अवधान |
| उदीप उदीचीन | | एकक एक | क (सर्वना०) -के, को, का, कि, |
| उह्वत्तर० } उद्वय पथित् | | एग (अणोग) एक (अनेक) | क, अकस्मान्, कस्मि, केह, कोह्, |
| उह्वेत्तर० } | | एगाइय एकतिक | किचि, आकिचण, कचण, कस्सह्, |
| उहेस उहेस | | एगओ एकनस् | कहिथि, केह (बहु०), केय |
| उम्भि उम्भिर | | एगस्त एकस्व | कओ क, स |
| उभय - | | एगन्त एकान्त | कन्वड -०ट कर्कश |
| उम्मागा } उम्मा | | एगयर एकनर | कंखा कंशा |
| उम्मुग्गा } | | एगया एकदा | कसिण्० कसिन् |
| उम्मञ्जा } उम्मञ्जा | | एगाणिण्० एकान्ति | कज्ज कार्य |
| उम्मुञ्जा } | | एगाणिय " | कट्ट काष्ठ |
| उयर उयर | | पज वायु | कड, -०ट कृत |
| उयरिण्० उदरित् | | पण, इण (सर्व०) एन-एण, इणं | कडि कटि |
| उयाहु उताहो | | पन्थ (त्य) अत्र | कइय कटुक |
| उर उरस् | | पय (सर्व०) एतदर्थक-पय, ए- | कण्टग धण्टक |
| उराल उरार | | याओ, एयस्म, एए, एयाह, एयानि | कण्डग काण्डक |
| उवक्कम उपक्कम | | एएहि, एणवु | कण्डूय (पाठ) कण्डूयए |
| उवगरण उपकरण | | पयावन्त्० एतावन्त् | कण्ण कर्ण |
| उवच्चइय उवचविक | | एलिकस्सग ईशक | कथ्य कुत्र |
| उवचय उपचव | | एलिस् (अणेलि-) ईदस (अनीद०) | कथय कुत्रचित् |
| उवरर उपरति | | एव, व एकार्थक | कथय (पाठ) कथिय, परिकथिह |

कण्ठ स्कन्ध
 कप्प कप
 कडबड कडंत
 कम्प् (धातु) अविकम्पमाण
 कम्बल —
 कम्म कर्मन्
 कय (विकय) कय (विकय)
 कयवर कववर
 कयार् कदाचिच्च
 कर, ० री —
 करण —
 करणया करणता
 कलह —
 कल्लुण कल्लण
 कल्लाण कल्याण
 कवाल कपल
 कसाय (धातु) कसाइया
 कपायय ,, कसाइय, कसाइय
 कसाइए
 कसाइण् ० कपायिन्
 कसाय कपाय
 कसायय कपायक
 कइंकहा कयकथा
 कहा कथा
 काउ काय
 काक्ष (धातु) कखेज्जा, अनिन् ०
 खेज्जा, अवकखइ, अवकखन्ति,
 अणवकसमाण, ० कखे ०
 काणत्त काणत्थ
 काणिय काणक
 काम —
 कामिण् ० कामिन्
 काय —
 कायर कातर
 कार —
 कारण —
 कारिण् ० कारिन्
 काळ —

कासकस कासकप
 कार्हीय कथिक
 किं —
 किंइा किंवा
 किण्ह कृष्ण
 कित्ति (अकि०) कीर्त्ति (अकी०)
 किमण कृपण
 किरिया क्थिथा
 किव (वि) ण कृपण
 किस क्थ
 किह कथा
 कीर्त्तिय (धातु) किट्ठ, विट्ठे
 कुआ कुनस
 कुक्कय कीकृत
 कुक्कुर —
 कुन् (धातु) अपलिउच्चमाण, स-
 कुए, सकुचिय, सकुचमाण
 कुचर चोरो पारदारियाय (व्याहया)
 कुट्ट (धातु) आउट्टे, बिउट्टन्ति
 कुट्टिण् ० कुट्टिन्
 कुणिय कुणिक
 कुणत्त कुणत्थ
 कुण्डल —
 कुन्त —
 कुन्तग कुन्तक
 कुप् (धातु) कुप्पन्ति, कुप्पेज्जा
 कुम्भार —
 कुम्भ कुम्भ
 कुम्मास कुम्माप
 कुल —
 कुस कुश
 कुसल कुशल
 कुसील कुशील
 कूर कूर
 १ कृ (धातु) करेभि, करेइ, करेन्ति,
 करए, कुज्जा, कुव्वइ, अकरेसु,
 अकरिस्सु, अकासी, अगास, कुब्बि-
 त्था, करिस्सं, करिस्साभि, करिस्सइ, कुष् (,,) कुष्से

करिस्सामो, करन्त्, -अकुर्वन्त,
 कुव्वमाण, गड, अकड, दुक्कड, सुकड,
 कय, किरिय, कायव्वन्, अकरणिज्ज,
 अकरणाय, कट्ट, निच्चा, कज्जइ, विज्जइ,
 कज्जन्ति, कीरन्त, कीरमाण; कारेइ
 कारेन्ति, कारवे, कारिस्था, कारोवेसु,
 काराविस्सं, काराविस्सु, कारावेस्स,
 पकरन्ति, पकंरन्ति, पकुव्वइ, पक्क-
 व्वमाण, पगड, सखय
 २ कृ (धातु) उवकरिंसु
 कृश (,,) कमेइ
 कृप् (,,) उक्कमे, उक्कसिस्सामि,
 विउक्कम, उक्कसिस्सामि, अवकससण
 कृप् (धातु) नपइ, पक्कपेइ, कृप्पे,
 कृप्पिया, पक्कपयानिन्, पक्कपेन्ति
 क्यण केतन
 कोट्ट कंठ
 कोट्टिण्- } कुट्टिन्
 कोट्टण- }
 कोल (पुणा, उदेहिया वा; व्याख्या)
 कोथिय काविद
 कोह कोव
 क्रन्त (धातु) कन्दइ, कन्दिंसु
 क्रम् (धातु) चकमित्ता, चकमिय,
 चक्कमिय, उवाइक्कन्त, उवाइक्कम्म,
 अभिकम, अभिकममाण, अणभिकमे,
 अणभिकममाण, अवकमेज्जा, अव-
 कमित्ता, अक्कन्त, अणुक्कन्त, बिउ-
 क्कम्म, निक्कन्त, दुण्णिक्कन्त, निक्कम्म,
 अभिनिकन्त, पडिभिकमित्तु, पडि-
 क्कमे, पडिक्कममाण, परक्कमे, परक्क-
 मेज्जा, परक्कमेज्जाधि, परक्कमन्त,
 परक्कमाण, दुपरक्कन्त, विपरि-
 क्कमन्ति, विपरिक्कम्म, उवसक्कमन्त,
 उवसकमित्ता, उवसकमित्तु
 की (धातु) किभे, किणावेइ, कि-
 णन्त, कीय

| | | | | |
|-------------|---|---|---|------------------------------|
| कुञ् (धातु) | अककुद्ध, आकुद्ध | गण्डिण्० गण्डिन् | मुष्फ | मुष्फ |
| कृस् (,,) | किलामेषव्य, परिकि- लन्त | गन्थ प्रन्थ | मुष्फग | मुष्फक |
| क्लिञ् (,,) | क्लिलसन्ति, परिकि- लेषन्ति | गन्ध — | गुरु | — |
| क्षण् (,,) | क्षणे | गम्भ गर्भे | गुरुग | गुरुक |
| क्षिप् (,,) | निक्षिषे, निक्षित- | गम् (धातु) गच्छद्, गच्छन्ति, गच्छेज्जा, गय, गमित्ते, अइयच्च, | मुहा | — |
| क्षण | क्षण | अणुगच्छन्ति, अणुगच्छमाण, अण- | गृ (धातु) | जा०रन्ति, जागिता, |
| क्षणय | क्षणक | णुगच्छमाण, आगममाण, ० मीण, | गृध्र (धातु) | गिज्जे, गिद्ध, अणु- |
| खन् (धातु) | खण्ह | आगय, आगमेत्ता, आगम्म, सम- | गिद्, परिगिज्जद् | |
| खन्ध | ह्कन्ध | नागय, असम०, अभिसन्नागय, | गोहि शूदि | |
| क्षम | क्षम | अभिसमागम्म, नियच्छन्ति, विगय- | गोमय | — |
| क्षय | क्षय | गम-यथा पारगम, क्षरिगम | गोय | गोत्र |
| खलु, खु, हु | खलुर्धक | गमण गमन | गोचर | गोचर |
| खषय | क्षयक | गरहा (अगरहा) गर्हा (अगर्हा) | प्रध्र (धातु) | गदिय |
| खाश्म | खादिम | गरुय गुरुक | प्रभ्र प्रद् | ,, गदिय, गहाय, अ- |
| खिस् (धातु) | खिस्ए | गल — | | मिनिगिज्ज, अपरिगहमाण, ० मीण, |
| खिप्य | क्षिप | गत्स् (धातु) पगन्वद् | | अपरिगहमाण, परिगिज्ज, पगही- |
| खु | खलु | गवेप् ,, गवेमित्था | | यतरा |
| खुजिय | कुञ्जक | गवेस्ग गवेयक | ग्ला (धातु) | गिलाए भि, गिला- |
| खुङ्ग-खुडिय | धुङ्क | गह (अगह) प्रह (अग्रह) | ग्लानि, | गिलानि, गिलाह, गिला- |
| खेड | खेट | गाम प्राम | एज्जा, गिलायन्त, गिलण, अगि- | लाण, गिलाय, परिगिलायमाण |
| खत्त | क्षेत्र | गामिण्० गानिन् | | |
| खेम | क्षेम | गामिय प्रामिक | घर | शुद् |
| खेय | क्षेत्र | गाय गात्र | घस् (धातु) | परिघाक्षु, दिगि- |
| खेयन्न | खेदश, -क्षेत्र | गार अगार | च्छन्त, दिगिच्छन्त, दिग्दिच्छन्ता, | |
| ख्या (धातु) | अकखाद्, अग्घाद्, आघाद्, आह्कखामा, आह्कखह, आह्कखन्ति, आह्कख, आह्कखेज्जा, अकखाति, आह्कख, अग्घाह्स्तामी, आह्कखमाण, अकखाय, अग्घाय, आघाय, आखाय, अग्घाह्कखद्, अग्घाह्कखेज्जा, उदाहिय, पच्च कखाएज्जा, पच्चियाह्कखे, अग्घा- हिय, गहिय, विकखाय, -वियकखाय, वियाहिय, सच्चिक्खद्, सखाए, सखाय, पच्चिसखाय | गाह्य (गाहिया) प्राह्क (प्राहिका) गहाचद् गृहपति गिद्धि गृद्धि गिम्ह प्रम्म गिर्णि — गिलासिण- प्रभसिन् गिलासिणी प्रासिणी गिह् गृह गीय गीत गीव ग्रीव मुण — गुप्ति गुप्ति | घाण प्राण घान्य (धातु) घादए, घायमाण, घायमीण घान्न प्राप्त घृप् (धातु) परिघेषन्व, परिघेषन्न घोर — | दिग्दिच्छन्ता |
| ग | यथा पारग रवण | गुप्ति गुप्ति | घ, (या, य, अ) | व अर्थक |
| गद् | गति | गुप् (धातु) गुत्, अगुत्, इगुच्छमाण | वउत्थ | वतुपं |
| | | | वउत्थय | वतुष्यद् |
| | | | वउत्थस | वतुरण |
| | | | वक्खु | वधु |
| | | | वत्तारि | वत्तारि |

| | | |
|--|--|---|
| खरम खरन्त | छट्ट पण | जाण यान |
| खयण खयन | छुण क्षण | जाणवय जानपद |
| खय — | छुणण क्षणन | जाणु जातु |
| खर् (धातु) खरे, खरेज्जा, अखारी, अणुखिण्ण, उवखरन्ति, उवखरे, बिय-रिसु, खवरिज्जा, अणुखवरह | छद् छन्दम् | जाम याम |
| खर — | छाया — | जाय जात |
| खरिया चयो | छिद् (धातु) छिज्जइ, छिन्देज्ज, छिन्दह, छिन्न, छिन्ना, वाच्छन्दे-जा, अव्वच्छिन्न, अच्छे, अच्छेज्ज पांगच्छिन्दिय, पाल० | जाया यात्ता |
| खल् (धातु) खल्लमाण, उरुवा लिय | छु जुह- (जुह्छुक्त्वारोन्ति) छेन्त्-छेत् | जावन्त्, जाव गावन्त्, यावकी-वम्, यावन्ती |
| खल (अचल) — | १ छेय छेक | जि (धातु) विहत्ता, विएसु जिण जिन |
| खवण (खयण) खयन | २ छय छेद | जिच्चा जिच्चा |
| खाण्ण- ल्यागिन् | | जीव (धातु) जीविस्सामो, जी-विउ, जीविउ-काम |
| खाय् (धातु) निकाय, (निकाय, निन्नाय निकाएऊण, नि-काएयव्वा) | | जीव — |
| खारिण्- खारिन् | | जीविण्- जीविन् |
| १ खि (धातु) मसखियण | ज यथा अण्डज पोतज | जीविय जीवित |
| २ खि ,, अणुवाह (य) अणुवाचय | ज (सर्वनाम य) जे, (एक-वहु०) जो, ज जा, जेग, जाए, जन्म, जमि, जाइ, जाओ, जेहि, जेमि, जमु | जीव्वा जिव्वा |
| खिहा चेश | अर यदि | जुहमन्त्० घुमिन्त् |
| खिन् (धातु) खेममि खेएह | जओ यन | जुज्ज युच्च |
| खिन् (आचन) — | जघ — | जुद्ध युद्ध |
| खिन्तमन्त खित्तमन्त् | जण जन | जुव् (धातु) होसेमाण, अहो-सयन्त |
| खिन्तमन्तग ,, | जणग जनक | जूर् (धातु) जूरह, जूरह |
| खिन्तय् (धातु) अणुविचिन्तिय | जणवय जनपद | जू ,, जरेहि, जुण्ण, परि-जुण्ण |
| खिर — | जण्य यत्र | जोग योग |
| खुद् (धातु) खुदथ (बोहओ) | जण्यय जनपद | जोगया योगता |
| खेइ वयइ (त्यज्) | जण्य जनपद | जोणि योनि |
| खेयण (अचे०) खेतन (अचे०) | जन्, जा (धातु) जायइ, जाय, जणयन्ति, अभिस जाय | जोणिय योनिक |
| खेल (अचे०) खल्लार्यक | जन्तु — | जोव्वण यौवन |
| खेलग, खीलिय खेलक | जम्म जन्म | ज्ञा (धातु) जाणइ, जाणेव्वा, जाण, जाणे, जाणाहि, जाणइ, जाणेइ; अज्जेसी, अज्जेसि, जाणन्त्, अजा-णन्त्, अयाणन्त्, जाणित्ता, जाणि-त्त नच्चा, नच्चाण, अणुजाणइ, अणुजाणए, अणुजाण, अणुजा-णित्था, समणुजाणइ, स० जाणाइ, स० जाणेव्वा, स० जाणनाण, |
| खेए (धातु) विगारिक्खइ, परिवि-चिहिट्टु | जरा — | |
| खोर चौर | जराउ जरायु | |
| खुय (धातु) खुय | जहा यथा | |
| | जार जाति | |
| | जार्हय जातिक | |
| | जारर — | |

०रणि, अभिजाणह, ०याणह, अ-
भिजाय, समभिजाणिया, स०
जाणेन्ना, स० जाणाहि, स० जाण-
माण, अबयाणह, अबयाणन्, आ-
जाण, आयाण, आयाणह, आ-
णाए, आणवेन्ना, आणवेउजा,
अउजावेव्व, आणावे०, परिजा-
णाभि, परिजाणह, परिजाणन्,
अप०, परिजाय, अप०, सुप०, सु०
जाणियव्व, सु० णाए, सु० णाया,
सुपन्नत्, पसवेमो, पन्नवेह, पन्न-
वेन्नि, पन्निन्नत्, अप०, विजाणह,
विजाणन्, विया०, आवि०, वि-
भाय, बुद्धि० विजाणित्ता
उचल्ल (धातु) उज्जालेत्तए, पउज्जा-
लेत्तए, पउज्जालेत्ता।

झञ्झा (माया-लोभेच्छाः व्याख्या)
झायिण-व्यधिन्
झाण ध्यान
झिमिय जिम्हिक (अलस्यवादी)
झस् (धातु) झोमइ झाममाण,
०रणि, झोमिय, दुज्झोसिय

ठाण स्यात्
ठण्ड दण्ड
डाह दाह
णं नूनम्
पहारुणी ब्राह्मिनी
त (सर्वना०) तदर्थक त, तं, स-
मासगत-तद् यथा तज्जोसमाण,
तोडिडोय, तेण (-ण), तण्डा, त-
स्स, तेमि, तस्मि, ते, ताइ, तहिं,
तेसि, तेसु
तइय वृतीय
तओ तत.
तंस श्या
तक्का तर्का
तच्च तरत्त

तण तृण
तत्तो तत
तत्थ तत्र
१ तत्थ (अत०) तथ (अत०)
तद्-
तन्-
तप्-
तप् (धातु) आयावेउजा, आया-
वई, अभिनावे, आयावयइ, आयवे-
त्तए पयावेउजा, पयावेत्तए, परि-
पइ, परिपपमाण, परियावेउज-
न्नि, ०यावउजन्नि, ०यावेन्नि,
० यवए, ०यावय, ०यावेव्व
तथ- तद्
तम तमम्
तर (ग)—(० क)
तर्क (धातु) तर्कियाण,
तथ तथम्
तवस्मिण- तपस्विन्
तस्-तद्
तस प्रस
तसत्त प्रसत्थ
तह (तथ)
तहा तथा
तहागय तथागत
ताण प्राण
तारिस् (अता०) ताइश (अता०)
तारिस्स्य तारिस्सक
तालु —
ताव तावन्
ति इति
निक्क्वा निक्किया
निक् (धातु) निक्कट, निक्कमाण
निज्ज ,, निक्कमाण, निक्कयमाण
निणिण श्रानि-निहिं
निस तिकत्त
निय थिक
तिरियक्व तियक्

तिरिच्छ } तियक्
तिरिय }
तिविह त्रिविध
तिहा त्रिधा
तीर -अतीरगत
तु उ तु
तुह धृ
तुच्छ —
तुच्छा तुच्छक
तुम (सशनाम) मग, तथ, ते,
तम, तुच्छ भ
तुला —
तास्सणीय तुष्णक
तु (धातु) तुइ, तण्ण, तारेत्तए,
अवहण्ण, पइण्ण अवहण्ण
तेइच्छा ।चारेत्ता
तेउ, तओ तजप्
तो भतम्
त्यज (धातु) तइ=चयइ चयान्नि,
चा चाणमि, चाणम्ममो, चयाह,
चइत्ता, च्छा (०ण), चाणमि,
चाए ० परिक्खयान्नि परिक्खाजा,
पारिक्खज, सचाणमि
जस्स (धातु) तमन्नि, परिवि-
त्तमन्नि, पारिवत्तमेत्ता
ज्वयत्तए (धातु) ज्वयत्ता
थ म्य यथा-अगागस्थ आमणन्थ,
छाउमत्थ, भवन्थ, मज्झन्थ
थण म्भन्
थडिल्ल-०ल्लु म्यण्डल
थावर स्यावर
थावरत्त स्यावरत्त
थी श्री
थुल्ल म्युल्ल
थोव स्नेक
थंस् (धातु) थसन्नु, थसन्नु, द-
सन्नु, थसमाण, थसमाण, थसमाण

दैत्य दैत्य
 दैत्येण दैत्येण
 दैत्यिण् दैत्यिण्
 दग् उदक
 दह दह
 दण्ड, डण्ड —
 दन्त —
 दं दन्त
 दम् —
 दय (धातु) दयह दयह
 दया —
 दरिस्त्रेण दर्शने
 दक्षिण दक्षिण
 दसम दसम
 दह (धातु) दहह, दहह, डण्डह,
 द०, समादहमाण, = डह०, विडण्ड-
 माण
 दा (धातु) दयाह, देह, दलहस्सामि,
 दासामि, दाहामि, दल-, अदल-,
 अहण्ण-, आह्वयन्ति, आहण आह
 यावए, आहज्जमाण, अणादयमाण,
 -०मीण, आहण्ट-आहण्टिण्- (आ-
 दत्ताय). अणादय, आयाण्ज,
 आयाणीय, आहण्ण, आयाए, आय,
 उवाहियमाण, पाएजा, समाहयान्त,
 समायाए, समाय
 दाढ दध्
 दायाव —
 दारुण —
 दास —
 दासी —
 दाह दाह —
 दाहिण दक्षिण
 दिष्टिमन्त् - दष्टिमन्त्
 दिष्टीय दष्टिक
 दिय दिज
 दिया दिवा
 दिष्ट (धातु) परिदेवमाण
 दिव्य दिव्य

दिग् (धातु) देसिय, समुहस्सि, येह —
 पदेसिय
 दिस्सा दिष्ट
 दि (धातु) दये-दीण, असदीण,
 सदह सद्विज्जह वा सदीणो
 दीघ दीघ
 दीह दीघ
 दुक्ख दु ख
 दुक्खिण- दु खिण्
 दुग्गच्छणा, दुग्गुं जुगुप्सा
 दुग्गह दुगंति
 दुग्घर दुग्घर
 दुग्घरग दुग्घरक
 दुग्घात्सग दुग्घात्सय
 दुग्घिक्ख दुग्घिक्ख
 दुपय द्विपद
 दुप्पड्डिबूहग, ०ग्घण्ण दु प्रति
 बृहणीय
 दुग्घि ०ग्घि दुग्घि
 दुग्घकम दुग्घतिकम
 दुग्घण्णर —
 दुग्घि —
 दुग्घियासग दुग्घिव सर्णीय
 दुग्घभ दुग्घभ
 दुग्घालसम द्वादश
 दुग्घिद्व द्विविध
 दुग्घस्सु दुग्घमु(-मुनि)
 दुग्घयोह दुग्घसम्बोध
 दुग्घओ द्विधातस्
 दुग्घर् (धातु) दुग्घजा, दुग्घजेजा,
 दुग्घजमाण, (हेग्घन्निग्घिग्घासु दोसु,
 रिग्घह दुग्घज्जह, दाहि वा पाएहि
 रिग्घह दुग्घज्जह-ग्घ्याख्या)
 दूर —
 दृग् (धातु) अद(द्)क्ख,
 दिट्ठ, दुग्घिट्ठ, दह, दहण, दिस्सह
 दीसह, अहिस्समाण, उवदसेजा
 देव —
 देसिय देशिक

दो दी
 दोणमुह दोणमुह
 दोस्स दोष
 धम्म धर्म
 धम्मय धर्मक
 धम्मधन्त्- धर्मधन्त्
 धम्मिण्- धर्मिण्
 धा (धातु) हिय, अहिय, आहाए-
 मि, आहायमाण, ०मीण, आहाय-
 माणाग, अणाटा०, समाहिय, सु-
 समाहिय-; निहे, निहेज्ज, निहाय,
 सुप्पणिहिय, परिहिस्सामि, फीहि-
 स्सामि, पेहेसामि, पिहिय-; स-
 बाएह, सधए, अभिधधए, आहा-
 एमाण
 धार्ध धार्ध
 धारिण० —
 धारिय धारिक
 धाव् (धातु) सधावह
 धीर —
 धुव, धुय धुव
 धू (धातु) धुणह, धुणे, धूय-,
 विहूणिया, विधूय-, संविहूणिया
 धूर- दुहितृ
 धृ (धातु) धारेजा, धारेत्तए, वि-
 धारए
 धो (,,) धोवेजा, धोय
 ध्या (,,) शाह, शायह, निज्जा-
 ह्त्ता
 १ न श
 २ न —
 नध् (धातु) भाणक्खेस्सामि, अण०,
 भाणि०
 नगर —
 नगिण नम
 नह नृत्य
 नड नट

| | | | |
|---------------------------------|----------------------------------|----------------------------------|----------------------------------|
| नन्द — | निजहोसइस्तर- | निर्झोषयेत् | पइट्टाण (अप०) प्रतिष्ठान, |
| नम् (धातु) नममाण, अनममाण, | निडाल ललाट | निर्झोषयेत् | (अग्र०) |
| नम, अनवयमाण, उवयमाण, परि- | नित्येय (अनि०) नित्य (अनि०) | निह्व निव्रा | पंसु पणु |
| भमेजा, विपरिणामन्ति, विपरि- | निह्व निव्रा | निह्वेस इदंश्च | पक्कस एह्वय वक्कस |
| णामेन्ति, पणय | नियण — | नियण — | पक्खालण प्रखालण |
| नमस्य (धातु) नमंखिय | नियह (अनि०) निवर्न (अनि०) | नियम — | पक्खण- पक्खिन् |
| नर — | नियम — | निधण न्याय | पगन्ध प्रप्रन्ध |
| गरग वरक | निधण न्याय | नियाण निदान | पगप्प प्रकल्प (सामाजारी = |
| नउ (धातु) नस्सइ, नासइ, वि- | निरय — | निरामगन्ध — | आचार) |
| गस्सइ, | निरालम्बनया निरालम्बनता | निरालम्बनता | पगाम प्रकाम |
| नह नख | निरुवट्टाण निरुवट्टण | निरुवट्टाण निरुवट्टण | पगार प्रकार |
| १ नाइ ज्ञानि (ज्ञानिपुत्र=महा- | निरोह निरोध | निरोह निरोध | पगइ प्रप्रइ |
| धीर) | निलाट ललाट | निलाट ललाट | पण (धातु) पयइ परिपणमाण |
| २ नाइ ज्ञानि (ज्ञानि-बल) | नित्राण- नियानेन | नित्राण- नियानेन | पारव० |
| नाग — | निवाय निवान | निवाय निवान | पञ्चानम प्रत्यकिम |
| भाण ज्ञान | निवेषण निवेशन | निवेषण निवेशन | पञ्चामिण- प्रत्यासान् |
| भाणवण्- शानवण् | निवेषण निवेशन | निवेषण निवेशन | पन्ट्टा पन्ना |
| भाणिण्- ज्ञानिन् | निव्वण (ने०) निर्वाण | निव्वण (ने०) निर्वाण | पञ्जय पयय |
| नाभि — | निव्वेय निवद | निव्वेय निवद | पञ्जयमिय एवम मन् (धातु) |
| नाम नामन् | निम्मार नि मार | निम्मार नि मार | पञ्जा पञ्जक (शब्द, रूप, रस, |
| नामय नामक | निम्मयस्स नि प्रेम | निम्मयस्स नि प्रेम | गन्ध, लय) |
| १ नाय ज्ञान् | निम्मेम (ने०) नि शेष | निम्मेम (ने०) नि शेष | पइण पइण |
| २ नाय ज्ञान | निम्मामिय नि शेषिक | निम्मामिय नि शेषिक | पान्कल पान्कल |
| नायपुत्त ज्ञान्पुत्त | निह (अनि०) निघ (इत् धातु) | निह (अनि०) निघ (इत् धातु) | पान्क (पाण्डयक) प्रत्येक |
| नालीय नालिक | नी (धातु) उवर्णाय सुवर्णाय | नी (धातु) उवर्णाय सुवर्णाय | पान्ग्गइ प्रान्ग्गइ |
| नास नाश | पारिणज जमाण, विणइत्तु, विणण्त्ता | पारिणज जमाण, विणइत्तु, विणण्त्ता | पान्ग्गय प्रा घात |
| निकरण (नो निकरणए पि, नो | नीया नीवा | नीया नीवा | पाइच्छायण प्रानच्छादन |
| निचय कर्तुं समर्थे, -व्याख्या) | नील — | नील — | पाइच्च (अप०) प्रान्ज (अग्र०) |
| निकरणया निकरणया | नीसंक् नि शक्त | नीसंक् नि शक्त | पाइयक एह्वय पाइक |
| १ निकाय — | नीस्सेस इह्वय निस्सेस | नीस्सेस इह्वय निस्सेस | पाइलेइ प्रातल्लव (लिख धातु) |
| २ निकाय इह्वय चाय (धातु) | नुद (धातु) पणुप, विपणोक्क | नुद (धातु) पणुप, विपणोक्क | पाइइणया प्रातइइणता |
| निकेत (अनि०) — | नियु० | नियु० | पइीण इतान्चान |
| निकम्म निक्कम्म | नूम कर्म, माया (अन्तिम अन्ति- | नूम कर्म, माया (अन्तिम अन्ति- | पइीयाव प्रतःकार |
| निगम — | मुस्येन कर्म माया वा) | मुस्येन कर्म माया वा) | पइुक्क एह्वय वत्तु (धातु) |
| निगमन्थ निर्धन्थ | नेत्त, नेय नेत्र | नेत्त, नेय नेत्र | पणरा पनक |
| निचय — | नेव्वाण निर्वाण | नेव्वाण निर्वाण | पणय पणय |
| निच्छण (अनि०) नित्यक (अनि०) | नो न | नो न | पण्डय पण्डित |
| निच्छरा निज्जरा | | | पत् (धातु) अइवाएज्जा, अणइ- |
| निज्जहारण्- निष्वायेन् | | | वाएमाण, आवाडिय, अप्पइय, निव |

इसु, निवइय; पडिवयमाण, सप यन्ति
पतेलस (पतेरस) प्रत्रयोदश—
 पगथ परिचय वा तेरसम करिस
 जेति वरिसाण-प्रकरणेण त्रयोदशम
 वर्षम् व्याख्या)
पत्त पत्र
पत्तिय प्रतीत
पत्तिय प्रत्येक
पद् (धातु) आबज्जन्ति, आवा
 यए, परिथावज्जन्ति, समावण,
 बज्जोववण, पडुवण, समुपज्जेन्ति,
 समुपज्जे, निवज्जइ, निवज्जेज्जा,
 पडिवण, विउडिवण, सपत्र
पडिसो प्रदिशस्
प-त प्रान्त
पन्थ पन्थन् (पथिन्)
पण प्राज्ञ
पणा प्रज्ञा
पणाण प्रज्ञान
पणाणमन्त्- प्रज्ञानवन्त्
पभंगुर प्रभङ्गुर
पभिइ प्रभृति
पमाइण प्रमादिन्
पमाय प्रमाइ
पमुइ प्रमुख
पमोक्ख प्रमोक्ष
 १ पय पद
 २ पय प्रज
पयणु प्रनु
पयणुग प्रनुक
पया प्रजा
पर — (परेण पर)
परम —
परिगह (अप०) परिग्रह (अप०)
परिगह्वावन्त् परिग्रहवन्त्
परिणिव्वाण (अप०) परिनिर्वाण
 (अप०)

परिआ परिज्ञा
परिआण परिज्ञान
परिपाग (पलि०) परिपाक
परिमंडल —
परिमाण —
परिमोक्ख दृष्टव्य पलिमोक्ख
परियट्ठण परिवर्तन
परियंदण परिवन्दन
परियाय पर्याय (आमण्यकाल)
परियाव पणित प
परिवन्दण (परि०) परिवन्दन
परिस दृष्टव्य करिस
परिस्सव परिस्सव
परिस्सह परिस्सह
परीसह ..
पलाल — (पलालपुञ्ज)
पलास पलासा
पलिपाग दृष्टव्य परिपाग
पलिबाहर (०द्विर) प्रतीप आहरे
 चरण गकोचए देनी भासाए-
 व्याख्या
पलिमोक्ख (परि०) परिमोक्ष
पलिय कर्म (पलियट्ठण, पलिय-
 पगन्थ-इत्यादि)
पवच प्रपञ्च
पवा प्रवा
पवाय प्रवाद
पव् (धातु) पासइ, पासे, पस्व, पास,
 पासइ, पासन्त्-, अपासन्त्-, पस्व-
 माण, पाममाण, पासिय, समणु-
 स्सइ, स० पस्सइ, स० पासइ
पसु (अप०) पशु (अ०)
पसुग (अप०) पशुक (अप०)
पह पथ
पहु प्रभु
पहेण (प्रहेणक)
पा (धातु) अपिइत्थ, अपिबित्था,
 पाउ, पायए, अपिबित्ता

पाईण प्राचीन
पाउ प्राबुस्
पाडियक दृष्टव्य पडिक्
 १ पाण पान
 २ पाण प्राण
पाणिण- प्राणिन्
पामिच्च प्राभित्थ (पामिच्चति अप-
 रस्मादुच्छिन्नमुद्यत्कम्; व्याख्या)
 १ पाय पात्र
 २ पाय पाद
पायर्- प्रातर् (यथा प्रातदाश)
पार — (यथा पारग, पारगामिन्,
 पारगम)
पारुसिया पारुसता
पालय् (धातु) पालेमाण, अणु-
 पालए, ०पालय, पालिज्जा,
 ०पालेज्जासि
पाव पाप
पावग पापक
पावाइय प्रावाइिक
पावाउय प्रावाउिक
 १ पास्स पार्थ
 २ पास्स पाश
पास्सग पश्यक
पास्सणिय प्रास्सिक
पास्सिम दर्शनीय
पास्सिमन्त्- (पस्वतीति पस्सिंभं
 व्याख्या)
पिच्छ, पिच्छ पिच्छ
पिड् (धातु) पिद्ध
पिड् पृष्ठ
पिड्ढि पृष्टि
पिण्ड —
पिण्डोल्लग पिण्डोल्लक
पित्त —
पिय (अपि०) प्रिय (मडि०)
पियर्- पितु
पीड् (धातु) पिड्ढ, आधीकए,

| | | |
|---|---|-------------------------------------|
| पवीकए, निष्पीक्य | परुष | अवबुज्जन्ति, भोबुज्जमाण; पबुद्ध, |
| पीठ पाठ | फरुसया-० सिया पक्षता | पडिबुद्ध, छुपडिबुद्ध, पडिबुज्ज, |
| पुच्छ — | १ फल — | सबुज्जमाण, अभिसबुद्ध |
| पुच्छुण प्रोच्छन | २ फल फलक | बुसिमन्त बुधी छज्जभो-इमाहया |
| पुञ्ज — | फलम ,, | बेहिह बोधि |
| पुढवी प्रथिवी | फालस फलरथ | ञ् (धातु) वेभि, बुद्ध, बुद्धय, |
| पुढो पृषक् | फारुसिया पाहवा | ब्या |
| पुण पुनर् | फास स्पर्श | — |
| पुणर् ,, | फुसिय एग | भरणी भगिनी |
| पुणो ,, | — | भगवन्त् — |
| पुण्ण पुण्य | बच्चओ वाहणस् | भज् (धातु) विमयन्ति, विमए, |
| पुस पुत्र | बन्ध (धातु) बद्ध | विमत् |
| पुरओ पुरतस् | बन्ध — | भज्जा भार्या |
| पुरक्कार पुरस्कार | बन्धण बन्धन | भंजन भजक (भू ति भूनी, |
| पुरस्थिम पुरस्तिम | बंध मल्लन् | तिए जाया भजया, भजया दृष्टा) |
| पुरा — | बंधवन्त् मल्लन्त् | भण (धातु) पडिमाणी |
| पुराण — | बल — | भत्त भक्त |
| पुरिस पुरुष | बलि — | भमुहा भुवुका |
| पुरे पुरस् | बहि बहिस | भय — |
| पुलाग पुलाक | बहिया बाह्यात् | भव — |
| पुण्य पूर्व | बहिरत्त बधिर व | भाग — |
| पुण्यं पूर्व | बहु — | भायर भ्रातृ |
| पुण्वि ,, | बहुग बहुक | भाव — |
| पुष् (धातु) पोषन्ति, पोषेन्ति, | बहुयर बहुतर | भाप् (धातु) भाषामो, भाषह, भा- |
| पोषेज्जा, पोषिय | बहुल — | सन्ति, भासिय, अनिभाषे, अनि- |
| पूह प्रति | बहुसा बहुसा | भासिदु |
| पूयणा पूजन | बाध (धातु) बज्जमाण, उन्वा- | भि भिद् |
| पूय् (धातु) पुच्छिदु, पुच्छि- | हन्ति, उन्वाहिउज्जमाण | भिउर, -भे० भिदुर |
| स्सामो, पुद्ध, अपुद्ध, पडिपुच्छमाण | बाल — | भिक्षुवारिया भिक्षावो |
| पृ (धातु) पुण्ण, पूरहत्तए, पूरेहत्तए, | बालया, -लिया बालना | भिक्षु भिक्षु |
| पडिपुण्ण, अपुण्ण | बाहा बहु | भिक्षुवणी भिक्षुणी |
| पेच्च प्रेय | बाहि राह्यम् | भिक्षु — |
| पेज्ज प्रेमस् | बाहिर, -हर बाहिर | भिद् (धातु) भिज्जह, अ०भे |
| पेसल पेशक | बाहिरग बाह | भी — |
| पेहा प्रेका (ईह धातु) | बाहु — | भीम — |
| पेहिण्- प्रेक्षिन् | बिदेय, वी० द्वितीय | भीय भीन |
| पोरिसी पोरुपी | १ बीय ,, | भुज् (धातु) भुजे, भुजह, भुजित्वा, |
| — | २ बीय बीज | भुजत, भुजिय, भभोषा, भोत्तए |
| फरिस लक्ष | भुष् (धातु) अबुज्जमाण, पुद्द, भुज्जो भुय् | |

भू (धातु) भवइ (होइ), भव-
 न्ति, भवे, भविस्सामि, भविस्सा-
 मो, होइ (भवइ), होन्ति, हाउ
 वधेधि, भूय, अणभिभूय, अभि-
 भूय, पभूय, सभवन्त, भव०, स-
 भूय, अभिसभूय
 भूमि —
 भूय भूत
 भेउर, भि० भिदुर
 भेत्तर भेत्त
 भेय भेद
 भेरब भेरब
 भो भोस्
 भाइण् भोजिन्
 भोग —
 भोम भाम
 भोयण भोजन
 भंय (धातु) भइ
 भ्रम —
 भइ मनि
 भइमन्ठ मनिमन्ठ
 भउय च्चुक
 भंकइ मर्कटक
 भंस मांस
 भस्तु इमथु
 भक्कइडा मर्कटक
 भग्ग मार्ग
 भच्चिय मर्त्य
 भच्छु च्चरु
 भग्ग मध्य
 भज्झिम मध्यम
 भद्धिया सृत्तिका
 भड्डंय —
 भण मनस्
 भणस्स मनस्
 भणि —
 भणुस्स (०स्स) मणु (०भ्य)
 भत्ता मात्रा
 भग्ग (धातु) पमत्तइ, पमत्तइ

भद् (धातु) मज्जेज्जा, पमत्तेज्जा, पमत्त,
 अप्पमत्त
 भद्विया मारद्विता
 भन (धातु) मन्नासि, मन्नइ, मन्नमाण,
 मय, दुम्मय, मणुया, मत्ता, मन्ता,
 सम्मय
 भंत्तय (धातु) निमन्तेज्जा
 भन्थु —
 भन्द —
 भमाइय ममायित
 भमाय (धातु) ममायमाण, अममा-
 यमाण, अममायमीण
 भमाग (भामग) ममक
 भरण —
 भस्सग मशक
 भहन्त् —
 भहु मधु
 भहुर मधुर
 भा —
 भाइण्- मायिन्
 भाइण् (अमा०) ,, (अमा०)
 भाण मान
 भाणण मानन (यथा वन्दन, मानन,
 पूजन)
 भाणव मानव
 भाणुस्स मातुल्य
 भामग भामक (मदीय)
 भायर- भानृ
 १ माया मात्रा
 १ माया मात्रा
 २ माया मात्रा
 ३ माया —
 भार —
 भारुय भारुय
 भास्स —
 भाइण (येभण, वड्डण) ब्राह्मण
 भिजा मज्जा
 भित्त भित्त
 भिहुं मिथुस्
 भिह मिथुस्

मीसी मिसी
 मुच्च (धातु) मुच्चइ, मुक्क, मुत्त;
 उम्मुच्च, मुच्च, पमुच्चसि, पमुच्चइ,
 पभोवत्सि, विप्पमुक्कव. पडिमोत्सु;
 विमुक्क, विमुत्त
 मुट्टि (मुट्टि) मुट्टि
 मुणि मुनि
 मुण्ड —
 मुत्ति मुक्ति
 मुत्तिण- मुत्तिन्
 मुत्तिय मुत्तिन्क
 मुन (धातु) सुय, सुणिया, सम्मुय
 मुद् ,, मुज्जइ, मूद, सम्मूद
 मुह मुख
 मुहुत्त मुहूर्त
 मुहुत्ताग मुहूर्तक
 मुहण्- मुत्तिन्
 मुय मूक (मूय, मूह)
 मूयत्त मूत्तव
 मूर्खे (धातु) मुक्खइ, मुक्खमाण.
 अमुच्छिय
 मूल —
 मूलियारी मूलिकारी (मार्जारी)
 मृ (धातु) सुयब (मृताची, मृता
 विनष्ट अर्चा (तेजस्) कषायरूपा
 येयां ते मृताची -व्याख्या) सपमारए
 मृत् ,, सपालिमलमाण, पमत्तए, पम-
 जिजा, पमाज्जया, पमज्जिय
 मृप् (धातु) आनुमत्त; विप्पर मपइ०
 मुपइ,० मपइ,० मुसइा मुवन्ती
 मेहाविन् मेहाविन्
 मेहणिय मेहनिक
 मेहिण्- मेहिन्
 मोक्ख मोक्ष
 मोण मोन
 मोत्तिय मौक्तिक
 मोयण मोचन
 मोह —

| | | |
|--|---|---|
| मूला (धातु) मिळाह | राय रात्र | पादिनोहिता, पडिलेदिय, सुपडिले- |
| १ य च | रायंसिण्—राजासिन् | दिया |
| २ य ज (यथा अण्डय, उांमय, जराउय, पोयय, रसय, ससेयय इत्यादि) | रायण्—राजन् | लिप् ,, लिप्यह, ओल्लिपेज्जा, उवल्लिपेज्जासि, ०ल्लिपे०, लिपेज्जा |
| यत् (धातु) जयाहि, जयमाण | रायहाणी राजधानी | लौ (धातु) रिजह, रीयह, रीयए, लौ |
| यम् ,, जय (यतेत्), आयय, आयतर, नियच्छन्ति, सजमह, सजय, असजय० | क्र (धातु) रिजह, रीयह, रीयए, रीयन्ते, रीयन्त्—, रीह-भा, रीयमाण | लुक्ख क्ख |
| १ या च | रिच् (धातु) रिक्क, अरिक्क, रिक्कासि (लक्कतवान् ') | लुञ्ज् (धातु) लुञ्चिडु, लुञ्चिय, सल्ल- चमाण |
| २ या (धातु) जन्ति, दुज्जाय, जावए, जावइत्त, निज्जाह, नियाह | रीया रीया | लुप् ,, लुप्पर, आलुपह, विलुपह विलुपन्ति |
| याच् ,, जाएज्जा, जाइस्सामि, जाहत्ता | रुक्ख क्ख | लुपइत्तर } लुप्पयित् लुपित्तर } |
| युञ् ,, अभिजुजियाण, ०जुजिया, विप्पउजन्ति | रुद् (धातु) रुदन्ति, रोयन्ति | लुञ् (धातु) लुञ्चिडु, (विष्टेन्ति, जिहिडु) लुञ्चिय |
| युष् ,, जुज्जाहि | रुध् ,, निद्ध | दूसग लुपक लुसभग लुपणक |
| रह (अर०) रति (अर०) | रुम् ,, आरुषियाण | दूसिण्—दुपिन् |
| रक्ख रक्ख | रुह् ,, अभिक्कज्ज, आक्कज्ज | दुद् (दुम्ब) रुक्ख |
| रक्ष् (धातु) सारक्खमाण, ०मीण | रुह् रुहन्ति | लुट्, ललु लेंट् |
| रस् ,, रज्जह, रएज्जा, रत्त, आरत्त, विरउत्तए, विरत्त | रुह् (रुह बीजजन्मनि) | लेस्सा लेध्मा |
| रण अरण्य | रूपप् ,, परुवेने, परुवेह, परुवेन्निन्टु | लोह्य लाकिह लाग कोक |
| रभ् (धातु) अरभे, आरभमाण, ०मीण, अणारद्द, समार (र) भइ ०रभन्ति, ०र (र) भेज्जासि, ०उजा र (र) भन्ति, र (र) भमाण, असमार०म, ०रने, समारभावह, ०वेज्जा | रुक्क लक्क रुविण् (अक्क०) रुविन् (अक्क०) रोग — | लोस्स (धातु) आलोएह, आलोउज लोम — लोच कोप लोहिय लाहित |
| रम् ,, रमह, रमन्ति, र्ज् अरय उवरय, अणुवरय, विरभेज्जा, विरय, अविरय | लज्ज (धातु) लज्जामो, लज्जमाण लट्ठि यट्ठि लद्धि ल०व | य इव, एव, वा |
| रय रजम् | लप् (धातु) लाल्पमाण | यार् वार् यओ वचप् |
| रस् — | लभ् ,, लभह, लभन्ति, लद्ध, अलद्ध, ०द्दग, लानु, लभिय | यक्कस, प० निरन्तधाम्भोदन्म्, पुराननसम्भुपिण्डम्, बहुविषस= |
| रस्सण रसत | लज्जल०म, पडल०म, पडिल्लामिय | सम्भोवोरसगाम्भमण्डकम्—व्याइय |
| राह रात्रे | लज्ज (धातु) अक्कलवए, अक्कलवि- याग | यक वक |
| राह्णिय रात्रिवि | लघण — | यच् (गन्तु) वुण, वणए, वाइय, पवुट्चह |
| राम — | लहु लहु लहुग लहुक लाग्रव — लात्रधिया लाघरग लाह् लाहा लान्दा — लिख् (धातु) पडिक्कहन्ति, पडिल्लेह, पडिल्लेह, सुपडिल्लेहिय, पडिल्लेहाए, वहु इत्त | यक्क वय, वाण्य वज्ज वज्ज (—भूमि) |

| | | | |
|---------------------------|------------------------------|--------------------------------|------------------------------------|
| बह्मण | बर्त्मक | २ वा (धातु) पवायन्त | विस्त — |
| बह्मण्य | बर्त्मन्-वार्ता | ३ वा (धातु) उद्भवन्ति, उद्भव | विस्ति वृत्ति |
| बह्मन्त | बह्मन्त | उद्बेभ्य | |
| बहुमग, | ० डू०, ० इर्त्मक | वाएण् वादिन् | १ विद् (धातु) विहता, विहृताण्, |
| घणस्सह | घनस्वति | वाउ वातु | वेणह, वेणुजा, वेयण, पवेण्मि, |
| घण्ण | घर्ण | वागरण व्याकरण | ० वेयन्ति पवेयए, पवेएस्तामि, |
| घारथ | वह | घाम — | पवेयइस्तामि, पवेइय, पडिबेयमाण, |
| घार्यग | वह्नक | १ वाय वात | विष्पडिबेएह, पडिमवेयइ, प० वेदइ, |
| घात्यु | वात्यु | २ वाय वाद | प० वेएइ प० वेय (य) न्ति |
| घह (धातु) | वयन्ति, वयाही, वह | घायस — | २ विद् (धातु) विउजह, विउजए, |
| | स्वामि, वयन्त, वयमाण, अनवय | घाया (वाच्) | निविउजह, निविउजे, निविद, |
| | माण, वहता, अणुवयमाण, ० मीण, | वाला (चमरी) | निविण्ण |
| | परिवयन्ति, ० वेणुजा, पवयमाण, | १ वास वपे | विदिन्ता विदिष् |
| | ० मीण | २ वास — | विद्वाय (धातु) विद्वायमाण, |
| घए | ॥ पहन्ति, बहेन्ति; अग्नि- | १ वासग वपेक, | (विद्वोषे वयमित्येवमात्मान मय्य- |
| | निव्हेउजा, निव्वहइ | २ वासग वासक | माना — व्याख्या) |
| घम् | ॥ वन्ता | १ वि अपि | विज्ञाण विज्ञान |
| घमण | वमन | २ वि विह | विज्ञयर्-विज्ञान् |
| १ घय | वयस् | विगिच्छा, ० गिच्छा विगिच्छा | विन्नु विज्ञ |
| २ घय | व्रत | विहमिस्स व्यतिमिध | विप् (धातु) परिवेषमाण, पवेधान्ति |
| १ घयण | वदन | विउ विदु | विपन्सिण—(विदार्थेन) |
| घयण | वचन | विओघाय व्यबपाद, व्यापात; व्य- | यिप्परिणाम विपरिणाम |
| घयस | वचस् | तिपान | विप्परियास विपयास |
| घवहार | व्यवहार | विक्रय विक्रय | विप्पिय विप्रिय |
| वस (धातु) | वसे, वसह, वमिन्ता, | विग्गह विग्रह | विमोफक्षण विमोक्षण |
| | अहियामेइ, अहियासए, अहिमु- | विच् (धातु) विगिचह, विगिच- | विमोह विमोक्ष |
| | ज मि, अहिय ममाण, अगहि- | माण, विविण, विगिचिस्ता | १ वियड विक्उ |
| | यासेमाण, अहियासिय, अहिया | विचिस विचित्र | ० वियड विहृत |
| | सेलए, अणुवामेउजासे, आवमे, | विजय — | वियन्त-कारग व्यन्तिकारक |
| | आवघन्त, परिवुसिय, ववसह. | विजा (या) णग विज्ञानक | वियाधाय व्याघात |
| वस | वश | विज्जन् षिट्ठन् | विरइ विरनि |
| वसा | — | विज्जा विद्या | विराग — |
| १ वसु (वसु द्रव्यम्) | — | विणहण्-विनयिन् | विरुच विरुप |
| वसुमन्त् | — | विणय विनय | विलुपयित्तर } विलुपयित् |
| वह (धातु) | वज्जमाण, परिव- | विणा विना | विलुपित्तर } |
| हितए | — | वितण्ड — | विधाय विवाद |
| वह | वध | वितइ वितर्द | विवेग विवेक |
| १ वा व वा (विकल्पार्थक) | — | वितह वितथ | विश (धातु) पाविहयर (ग), |
| | | | निविह, विनिविह, पविसए, पविसि- |

| | | |
|---|---|---|
| स्वामी, परिस्स, पवेक्षिया, अणुपविस्सिता | च वैर | संवचछुर संवस्सर |
| विसंहण विश्रमभण | वेद्य वेपक | संसप्पया संवर्षक |
| विसय विषय | व्यथ् (धातु) पक्वहिय | संसय संघय |
| विसाण विषाण | व्यथ् ,, सपिद, बहिय | ससार — |
| विसोग विशाक | व्रज् ,, परिव्वयन्ति, परिब्बाए, | संसेय संस्वेद |
| विसोत्तिया विसोत्तिका | परिक्वएज्जासि पक्वइय | संसोहण सशोभन |
| विस्समणया विश्रमभणता | व्वली ,, बह्लीण, अलीण | संहारण — |
| विस्सेणी विश्रयणी | शंम् (धातु) पससिय | सत्थिक सक्ति |
| विह विह | शक् ,, सक्खामो, सक्क, सक्का | संकप्प सकल्प |
| विहार — | शत् ,, आसाएज्जा, (सस्कुन-आ- शानयेत्) अणामायमाण, ०मीण | संकमण सक्रमण |
| विदि विधि | १ शम् ,, सन्न, समिय, समेमाण | संखाडि सखटिति |
| विहारिण- विहारिन् | २ शम् ,, सुनिसन्न (स० सुनि- भ्रान्त) निसम्म, निसामिया, निसामेत्ता | संग — |
| विट्ठिसा — | शिध् ,, सिक्खेज्जा, सुसिक्खेज्जा | संगथ मग्रन्थ |
| विट्ठिसग विट्ठिसक | सुसिक्ख | संगाम सप्राम |
| वीरमिस्स व्वल्लिभिथ | शिया ,, विपामिह परिसेह, सु- विमिट्ठ | संघाडी सघाटी |
| वीर — | शी ,, सए | संघाय सघात |
| वीराय् (धातु) वीरायमाण (अ- वीरा वीरा-मवित्ता) | शुच् ,, सोयह, सोएज्जा, सोयए, अणुसायन्ति | सख मत्त |
| वीरिय वीवि | शुथ् ,, सद्ध, सुविमुद्ध | सज्ज (धातु) सज्जेज्जा, सत्त |
| वीहि वीधि | श्रद् धा ,, सद्ध | सजोग मयोग |
| वुक्कम व्युक्कम | श्री ,, मिय अणुमिय, अणुम्मिया, अणुम्मिण्ण, समुक्कमगामि, ०णामि, समुम्मिण्णामि, ०णामि, ०णाड, निम्मिय | सट्ठिण्- अदिन् |
| वुट्ठि वट्ठि | शु ,, सुणह, सुणड, सुणह सुण- माण, सय, दुम्मय, सुणिया माब्बा, सस्सुय, मुस्सुममाण | सट्ट शट |
| वृ (धातु) पाउणिस्सामि, पाउड, निवरेड, निव्वुड, अभिनिव्वुड, पाणिव्वुड मवुड | ष्वक्क ,, अवसक्केज्जा | सत्त सत्त्व |
| वृज् ,, वज्जजा, वज्जन्न, वज्ज, परिवज्जा, परिवज्जियाण, | १ स, से, सो म (नत्र सर्वनाम, पुट्ठिक्क-प्रथमकवचन) | सत्ता — |
| वृत् ,, अदवत्त ङ्हो, वत्त। ङ्हो) उज्ज, । नउट्ठे, तिउट्ठे, तुट्ठे अउट्ठे वट्ठे, नियट्ठेत्त, नियट्ठमाण, अभिनिव्व- त्तेज्जा, । वनिग्गमाण अणुत्तियट्ठे, ०यट्ठमाण, । वयत्तुण, विउट्ठण, विथइत्ता, सवट्ठेज्ज, सवट्ठेत्ता, मवट्ठता | २ स महासक | सन्धि शक्ति |
| वृथ् ,, वट्ठह, वेट्ठह, अभिमवुट्ठ | ३ स स्व | १ सत्थ शान्न |
| वेय वेद | संइ सद्ध | २ सत्थ शान्न |
| वेयण वेदन | | सग्घर- शान्त् |
| वेयवत्- वेदवन्- | | सद् (धातु) सद्द, अवधीयमाण, आसज्ज निम्मएज्जा, समासज्ज, निम्मण्ण, विप्पसायाण, थिक्कीयमाण, विशण्ण |
| वेयावडिय वयापूत्त्य | | सद्द शब्द |
| | | सद्धा श्रद्धा |
| | | सद्धि सधोम |
| | | सन्त् (धातु) अपज्जवसिय, पज्जव- सिय, उपज्जवमाण |
| | | संताणग सन्नानक |
| | | संति शान्ति |

| | | |
|-----------------------|----------------------------|----------------------------------|
| संज्ञासूचिका- | सम्पूर्या सम्पूतिता | सामागिय सामन्व |
| संघर सस्तर | सम्पूच्छिम सम्पूच्छिम | सामञ्च श्यामस्व |
| संघष सस्तर | १ सय शय | सामिण्- स्वादिन् |
| संघारग सस्तरक | १ सय स्वक | साय सायं |
| संघुय सस्तुत | १ सयण शयन | १ सार — |
| संघण सन्धान | १ सयण स्वजन | २ सार स्मार |
| संधि — | सयं स्वयम् | सारग स्मारक |
| सञ्ज्ञा सञ्ज्ञा | सययं सततम् | साला शाला |
| संनिचय — | सया सदा | सामय साधन |
| संनिवेश संनिवेश | सर स्मर | साहम्मिय साधर्मिक |
| संनिहाण मनिधान | १ सरण शरण | साहारण साधारण |
| संनिहि मनिधि | २ सरण स्मरण | साहु साधु |
| सन्धिपण- सर्पिन् | १ सरणया शरणता | सिंग शृङ्गा |
| सबलस शत्रुत्व | २ सरणया स्मरणता | सिच् (धातु) ससिचमाण, सि |
| सभा — | सरीर शरीर | प्र०, ससिचियाण |
| सम — | सरीरग शरीरक | सिदिल शिथिल |
| समजस — | सह शस्य | सिणाण ज्ञान |
| समण ध्रमण | सवण ध्रवण | सिद्धि — |
| समणुञ्च समनुञ्च | सख सर्व | सिध् (धातु) निशिद्धा, पठिवेधिय |
| समय — | सख्यओ सर्वतस् | सिर शिरस् |
| समया समयता | सख्यस सर्वस्व | सिलिषडण्- श्लोपदिन् (श्लोप |
| समायाण समादान | सख्यन्थ सर्वत्र | पादादो काठिन्यम्-भ्याड्या) |
| समायार समाचार | सख्यया सर्वदा | सिलोग श्लोक |
| समारंभ — | सख्यतो सर्वशम् | सिसिर शिशिर |
| समाहि समाधि | सखावन्न्-सर्वावन्न् | सिस्स शिष्य |
| समिय, ० या सम्यक् | सम्सय श्रुत्य सासय | सीय शीत |
| समुद्धारण- समुत्थायिन | सह (धातु) सहइ, सहए | सील शील |
| समुत्पाय समुत्पाड | १ सह — | सीलमत शीलवन्त |
| सम्पुस्तय समुत्खय | २ सह स्वक (सह सम्मड- | सीच् (धातु) सिचिस्सामि, |
| संपसारग सप्रसारक | या=स्वकसन्मत्या) | सीवि० |
| संपादम् सपातिम | सहसाकारय (धातु) सहस | सीस शीर्ष |
| सफास सस्पर्श | कारह | सु — |
| संबाह सन्वाध | सहि सखि | सुकर — |
| संबाहण सन्वाधन | सारण-शायिन | सुकरण — |
| सम्मद सम्मति | सारम स्वादिम | सुक शुक |
| सम्मर्या सम्मतिता | सागारिय सागारिक | सुकिल शुक |
| सम्म सम्यक् | साड शाट | सुहु सुहु |
| सम्मत् सम्यक्त्व | साध् (धातु) साहेइ, साहह, | सुणग सुनक |
| सम्पूर सम्पूति | साहिस्सामो, साहिय | सुणिम ... |

| | | |
|--|------------------------------------|-------------------------------------|
| सुग्हा सुधा | सोषाग स्वपाक | १ हस्त हर्ष |
| सुत सूत्र | सोहि शोषि | २ हस्त, हु० हस्त |
| सुन्न सूत्र्य | स्वन्न (धातु) स्वल्पिषु | हा (धातु) जहाह, जहति, जहाहि, |
| सुप (धातु) सुत | स्तन् ,, षणति | हीण, जहिता, विज०, हिच्छा; परिहा- |
| सुभ्रं शुभ्र | स्तम् ,, ओहृभियाए, ओहृभिया | यमाण, अप०, अपरिहीण, पहाय, |
| सुभिः सुरभि | स्तृ ,, सघरेए, सघरेउजा, सघ- | विप्यजठ, विजहिता, वियहिणु |
| १ सुय श्रुत | रित्ता | हार — |
| २ सुय सुत | स्था , चिहृह, चिहृ, चिहृउजा, | हालिह हारिप्र |
| सुरभि —गन्ध | ठाएउजा, चिहृन्—, अचिहृन्, डिय, | १ हास हर्ष |
| सुवसु — | ठावए, उहृय, अणुहृय, उहाए, उहाय, | २ हास — हास्य |
| सुख्य सुत्रत | ससुहृय, ससुहृय उवहृय, अणुव०, | हि — |
| सुसाण श्मशान | परिहृउजा, परिहृवेत्ता, विपरिचिहृह, | हिस (धातु) हिसह, हिमन्ति, |
| सुह सुख | विहृय, परिविचिहृह | हिंसस्सन्ति, हिंसिषु, अहिममाण; |
| सुहम् सूक्ष्म | रूपं ,, विष्कन्दमाण | विहिंसह, निहिंसन्ति, अविहिंसमाण |
| सुर शक्ति | स्पृश् ,, कुषन्ति, फासए, पुहृबन्—, | हिंसा — |
| सुर्य सूर्य, अथवा सूरिक | पुहृ | हिमग हिमक |
| सुणिय सूनेक | स्पृह् , पीहए | हिमवाय हिमपात |
| सुर शूर | स्फुट् विकुबमाण | हिय हए |
| सु (धातु) पसारए, पसारेमाणे, | स्मृ ,, स (म) रन्ति, अणुस- | हियय हृय |
| पसारिय, पसारेणु, सपसारए, | सरह | हिरण्य हिरण्य |
| अणुसपरह | सु ,, बीसन्न | हिरिण्— (=हीमन्) |
| सुह् ,, बोमिरे, बोमह, विओसउज, | स्वाह् ,, साहउजह, साहउजस्सामि, | हिरां =ही |
| ०सिउज, -सेज, बोसउज, आणिसहृ | साय, असाय, अस्साय | हु खट |
| सेजा शय्या | हंता इन् | हुं |
| सेय अयम् | हंभी — | हुरत्या हुरस्तान |
| सेन् (धातु) सेवह, ० ए, सेवन्ति, | हणु हय | हुम्न ह्य |
| सेवेउजा, सेवेन्ध्या, सेवेसु, सेवेत्ता, | हणुय हनुक | ह (धातु) अभिहृह, अक्हरन्ति, |
| आमवह, ० ए, आसवेत्ता, पदि- | हृन्ध हस्त | आहरे, आहह, आहहृह, |
| सेवे, पदिमेवमाण | हन् (धातु) हणति, हणिया, हणे, | आहोरमाण, उदहरन्ति, उदाहह, |
| सेस शेष | हय, हणह, हणन्—, हन्त्व, हय, | परिहरन्ति पारहरउजा, परिहरन्, |
| सेहि (सिद्धि) | (हओवहय), हम्मह, हन्नड, आहनु | विहरे, विहरिन्ध्या विहारिषु, विह- |
| सेणि (णी) य शोणि | उवहय, निहणित्त्र, निहाणेसु, अविह- | रन्, विहरमाण, विहरजा |
| सेन्न श्रोत्र | म्ममाण, | हृप (धातु) हारिष |
| १ सोय शौच | हंनर- हन् | हेउ हेनु |
| २ सोय श्रात्र | हृय हद | हेमन् हेमन् |
| ३ सोय स्नानम् | हरिय हारि | हाहृ हु० ओष |
| सोयविया शौचवता | १ हृव्व अवीन् | हृनु (धातु) निष्हृवह, निष्हृवेउजा |
| सोलस शोचस | २ हृव्व हव्य | ही ,, अहिरीमाण |

कतिपया विशिष्टाः पाठ-भेदाः ।



| | | | |
|---------------|--|-----------------|---|
| पृ १ पं. १ | आउसतेण, आसुसतेण, आवसतेण | | |
| „ १० | अणुसचरह, स्थाने अणुसचरह | | |
| „ १६ | सन्धेइ स्थाने सन्धावह | | |
| „ १७ | भोयणाए स्थाने भोयणाए | | |
| पृ २ पं २४ | नियाण स्थाने नियाय, निकाय | | |
| „ २६. | वि.विहणु विसोत्तिय स्थाने वि.विहता (वियहिय, वा) पुञ्जसजेण | पृ. ८. पं १४ | भारे पससिए स्थाने भारे तथा नमसिओ |
| पृ. ३ पं ३ | सत्थ चेत्य स्थाने पास वेध | „ १६ | पडिसेहिओ स्थाने पडिलाभिओ. |
| „ ७. | पासमाणे क्वाइ स्थाने पासमाणो पासिमाइ, सुणमाणे उहाइ स्थाने सुण-माणो सुणिमाइ | „ १८ | •क्वेहि सत्थोहं इत्यादि पाठस्थाने सत्थेहं विरुव-क्वाण अट्टाए, त-जहा एए पाठ. । |
| पृ. ४ पं २३ | एवस्स स्थाने एयस्व, एगस्व. | „ २३ | अय सन्धीति० स्थाने अय सन्धि अदक्खु |
| „ २७. | इह स्थाने इति | | |
| पृ. ५ „ २०. | चिने स्थाने चिट्ठे | पृ ९ पं ६. | अन्नहा ण पाएए स्थाने अन्नयरेण पासएण |
| „ २१ | सत्थे स्थाने सने | „ २५. | से त जाणह जमह वेमि स्थाने से एवमायाणह ज वेमि. |
| „ २२. | माणमाण स्थाने असमजयाण | | |
| „ २३ | परिभाणेहि स्थाने पन्नाणे हे | | |
| पृ ६. पं. १० | जावसोत्तपरिभाणेहि अपरिहायमाणेहि स्थाने जाव सोत्तपन्नाणा अपरिहाणा | पृ १०. पं ९ | दिट्ठ-भए स्थाने दिट्ठ-पदे |
| „ १५ | क्वचित् वि एगे नास्ति | „ १४ | तम्हा बीरे न रब्बइ स्थाने तम्हावेव विरज्जए |
| „ २३ | विणहणु स्थाने विणा वि | „ २१ | क्वचिन् एस बीरे पससिए नास्ति क्वचिन् सुवसु बीरे प० |
| „ २६. | क्वचित् णाइवेले अप्रे सयणबळे अधिकपाठ | पृ. ११ पं. २ | आवह अणु० स्थाने उक्खावहेमेव अणु० |
| „ २७. | दण्ड-समायाण स्थाने दण्ड समारअह, अया दण्ड-समायाण सपेहाए, इति धा | „ ७ | आयव नाणव स्थाने आयवी नाणवी. |
| „ ३२. | से असइ इत्यादि पाठस्थाने ' एगमेगे खलु जीवे अर्हयद्दाए असइ-उत्तारोए असइ नीया-पोए, कण्डगाट्ट-याए नो हीणे नो अहरित्ते.' एतादृशो नामाजुनीय पाठ । | „ ११ | माराभिक्की स्थाने मारावसक्की, |
| | | „ २५ | कम्म-सुत्त च ज स्थाने कम्ममाहु य ज. |
| | | „ २९. | मइम स्थाने मेहावी |
| पृ. ७. पं. २. | क्वचित् धाय नास्ति । तथैस 'पुरि-सेव वल्लु हुक्खुमेगासुरेवपणे पुत्ति | पृ. १२. पं. १३. | अगं च इत्यादि स्थाने क्वचित् मूळे च अगं च विएत्तु बीरे, इति तथैव मूळे च अगं च विएत्तु बीरे, कम्मासं |

- वेह विमोक्षण च इति नागार्जुनीय पाठभेद ।
- ॥ २६ ॥ नाणुजाणए अथे क्वचित् छणन्त नाणु-
मोएय अधिक पाठ ।
- ॥ ३० ॥ निसण्णो पावेहि कम्महिं स्थाने तेषु
कम्मेषु पाव
- पृ. १३ पं. १ गामी स्थाने गाम
॥ १३ ॥ धरे स्थाने धरे तथा
विमय पञ्चगाम्मिंवि
दुविहम्मि तिथ-न्थि
भावभो सुद्रु जाणिसा
से न लिप्पह दोसु वि
(१ विमयामि पञ्चगाम्मि इत्थपि प्रत्यन्तरे)
इत्येवैरूपो नागार्जुनीय पाठभेद ।
- ॥ १९ ॥ अवरणे पुच्च न सरन्ति एण इत्यादि
पक्तिस्थाने
अवरणे पुच्च किह से अईय
किह आगामेस्स न सरन्ति एणे,
भासन्ति एणे इह माणा वा (ओ)
जह से अईय तह आगमिस्स ।
एवैरूपा पंतय ।
- ॥ २३ ॥ अद स्थाने अय, अद वा पाठ ।
- पृ. १४ पं. २ दुक्ख-मत्ताए स्थाने दुक्खमायाए,
धम्मयायाय इति वा पाठ ।
- ॥ ६ ॥ जूणिपुस्तके उवरय जाव सगहम्मि
पाठो नोपलभ्यते ।
- ॥ १९ ॥ क्वचित् मार स्थाने मरण क्वच्च
मार च मरण च उभयमपि ।
- पृ. १५ पं. १ नो लोण० एतद्वाक्यस्थाने नो य
लोणेसण चरे
- ॥ ४ ॥ जयमाजे धरे स्थाने जयहि एव
॥ ८ ॥ आधाइ स्थाने अक्खाइ तत्रैवैवं
नागार्जुनीय. पाठभेद — आधाइ
धम्म खलु से जीवाण, त-जहा समार-
पडिवसाण मणुम मवरथाण आरम्म-
विणईण दुक्खुअग सुहेसगाण धम्म-
सवण-गोवेसगाण तिक्खल-सग्धाण सु-
स्सुसमाणाण पविपुच्छमाणाणे विस्साण-
पत्ताण,
- ॥ १५ ॥ पुढो पुढो इत्यादि पंक्तिस्थाने एता-
ददां पाठान्तरम्—एय मोहे पुणो
पुणो, इहमेणेसि तस्य-तस्य सधवो भवह,
अहोववाहए फासे पडिसवेयथन्ति,
चित्त कूरेहिं कम्महिं चित्त परिविचिहह,
अचित्त कूरेहिं कम्महिं नो चित्त
परिचि चिट्ठ
- ॥ २४ ॥ ने एण क्यासि स्थाने एवमाइक्खन्ति.
॥ २५ ॥ जूणिपुस्तके अणायरियवयणमेय
नास्ति
- ॥ ३० ॥ पाबाउया स्थाने जूणिपुस्तकं समणा
माहणा
- पृ. १७ पं. १ तमसि स्थाने त अस्स
॥ ९ ॥ कम्मणा सफल स्थाने इम्माण सफलत्त
॥ १५ ॥ आवन्ती इत्यादिवाक्यस्थाने नागा-
र्जुनीयमेताददां पाठान्तरम्—
जावन्ति केह लोण उक्काय-वह समार-
मन्ति अट्टाए अणट्टाए वा
॥ २१ ॥ मरणइ एह स्थाने मरणादुवेह
॥ २५ ॥ कट्टु एवमवयाणओ इत्यादि पंक्ति-
स्थाने नागार्जुनीयपाठभेदो यथा-
जे खलु विसए सवह, धेविणा वा नालो-
एइ परेण पुट्टा निण्हवह, अहवा त पर
सएण वा दोसण पाविट्ठयरएण वा
शंसण उवम्मिपेज्जा
- ॥ २९ ॥ फासे स्थाने मोहे; क्वचित् पुणो अथे
ससय परिजाणओ विदोप ।
- पृ. १८ पं. १ पञ्चमाणे स्थाने तऽपमाण
॥ १६ ॥ छन्द इह माणवा स्थाने छन्दाणं इह
माणवाण
॥ २६ ॥ से सुप्पडि० पतत्पंक्तिस्थाने से सुय
अणुविचिन्तिय नवा
॥ ३१ ॥ अ-पमान परिअए स्थाने जूणिपुस्तके
अपमाय सुसिक्खज्जा
॥ ३२ ॥ अणुवांसज्जासि स्थाने अणुवाजेज्जासि.
पृ. १९ पं. ८ सिया स्थाने चव, अत्रेसिए स्थाने
अणुस्सिणा, अणुस्सिणा.
॥ १३. ॥ सुट्टा० पतत्पंक्तिस्थाने जुवारीय व
जुवम.

- ॥ १६. भए स्थाने पदे.
 पृ. २१. पं. २६. एत्थ विरेज्ज वेयवी स्थाने विवेग किट्ठे वेयवी.
 ॥ २७ विणइत्तु स्थाने विणएत्ता.
 ॥ २९. वडुमग स्थाने वडुमग
 पृ. २२. पं. १४ अणेग-इवेहि कुलेहि जाया स्थाने अणेगओ तेसु कुलेसु
 ॥ १५ इवेहि सत्ता स्थाने इवेसु गिद्धा
 पृ. २३ पं. २. पक्खइ स्थाने पगळभइ
 ॥ ७. धूयवाय प० परतपत्तिस्थाने धुव, धुय इति वा पाठ । तथैव धूयो-वाय पवेयइस्वामि इति नागार्जुनीय-मपि पाठान्तरम् ।
 ॥ १७. चहत्तापुंश्च सजोग स्थाने चूर्णिपुस्तके जहिणा पुंश्चमाययण
 ॥ २६ अहेगे धम्ममायाए स्थाने सहिए धम्म-मायाय
 ॥ २८ मेहि स्थाने गथ, गिड्डि
 पृ. २४ पं. १४ धीरे स्थाने धीरे
 ॥ १५ एय खु सुणी स्थाने एय सुणी
 ॥ २१. लाघवमा० इत्यादिपत्तिस्थाने एता-दशो नागार्जुनीय पाठभेद — एव खलु मे उच्यमरण-लाघविय तव कम्म-प्रख्यकारण करेइ ।
 ॥ २२ सव्वओ सव्वत्ताए स्थाने नागार्जुनीय पाठान्तरं—सव्व सव्वत्ताए
 ॥ २८ सधेमाणे स्थाने सन्धणाए, समुट्टिए स्थाने समुट्टिए.
 ॥ ३०. अणवकखमाणे स्थाने अणवकखेमाणे (ञे), अवयमाणे, इति वा
 पृ. २५ पं. १ नेहि महावीरेहि स्थाने चूर्णिपुस्तके तसि महावीराण
 ॥ २. उवल्लभ स्थाने पइल्लभ, हिच्चा उव० इत्यादिवाक्यस्थाने हिच्चा उवसम अहेगे फारुसिय समारमन्ति ।
 ॥ १५ जाइ स्थाने गन्नाइ
 ॥ २६ भविहिंथे इत्यादिशब्दस्थाने भवि-हिसगा सुव्वया दन्ता अहेग पस्स इत्येवरूपाःशब्दा, तथा—एता-दशो नागार्जुनीयः पाठभेदः—

- “ समया भविस्सामो अणगारा भवि-चणा अपुत्ता अपसु भविहिसगा सुव्वय दन्ता परदत्त-मोहणे, पाव कम्म नो करिस्सामो ” समुदाए ।
 ॥ ३१ सया परकमेज्जासि स्थाने चूर्णि-पुस्तके सव्वओ परिष्वाएज्जासि.
 पृ. २६ पं. ६ आइक्खे वि० परतपत्तिस्थाने नागार्जुनीयमेतत्पाठान्तरम्—जे खलु भिक्खु बहु-त्सुए बरुभागमे आइ-रण-हेउं कुपले धम्म कहा लद्धि-सम्यसे खेत काल पुरिस समाउज्ज ‘ के अय पुरिमे क वा दरिसण अमिच्चपने ? ’ एव गुणजईए पभू धम्मस्स भाव वेत्तए ।
 ॥ २० तम्हा लुहाभा नो परिवित्तसेज्जा स्थाने चूर्णिपुस्तके जधिमि लक्षिणो नो परिवित्तसन्ति इति पाठान्तरम् ।
 ॥ २४ विओवाए स्थाने वियावाए, वियावाए, विवावाए, विवावाए, इति पाठा-न्तराणि ।
 ॥ २७ कालोवणीए० इत्यादि वाक्यस्थाने नागार्जुनीया पठन्ति— जाइ गल्ल अइ अपुण्णे आउ-तेउ-काल करिम्मामि, ते परिण्णा-लोवे अकिन्ती दुग्गइ-समणानामण च भविस्मइ ।
 पृ. २७ पं. १३ नो सुय० इत्यादि शब्दस्थाने चूर्णि पुस्तके न एस धम्मं सुयक्खाए सुप-न्नं भवइ एते शब्दाः ।
 ॥ २० उदाहिया स्थाने उदाहडा
 ॥ २३ पडिक्क स्थाने परिक, पाडियक्क, पडिक्क, पडियक्क, पाठान्तराणि, तत्रैव जीवेहि कम्मसमार-म्भेण स्थाने दण्ड समारमन्ते पाठा-न्तरम् ।
 पृ. २८. पं. ३. वेएमि स्थाने चूर्णिपुस्तके (कडे-अणन्ति) करेमि (त तु न लुज्जइ).
 ॥ २३. सोच्चावइ मेहा० इत्यादिशब्दस्थाने सोच्चा मेहावी बयण प० ।
 ॥ २९. सनिहाण-सत्पस्स स्थाने चूर्णिपुस्त-के सनिहाणस्य सेयन्नं (अमवायणाए) सनिहाणस्यस्य खे० ।

**SOME INVALUABLE PUBLICATIONS FOR THE STUDENTS
PALI AND PRAKRIT**

| | |
|--|--------|
| 1. Abhidhanappadipika (A dictionary of the Pali language) by Moggallana Thera, edited in Devanagari with an index of the words by Muni Jinavijaya. | 5-0-0 |
| 2. Palipathavali, A Pali Reader for beginners, by Muni Jinavijaya | 0-12-0 |
| 3. Prakritkathasamgraha, A Prakrit Reader for Beginners by Muni Jinavijaya | 0-14-0 |
| 4. Kumarapalapratibodha, A rare Prakrit work of very great importance edited by Muni Jinavijaya (Gaekwar Oriental Series) | 7-8-0 |
| 5. Chedasutranī (Brihatkalpa, Vyavahara and Nisitha) Three invaluable books of the Jain Canon, edited for the first time in Devanagari | 2-8-0 |
| 6. Supasnanabacariyam, Life of the Seventh Jain Tirthankara in Prakrit edited with sanskritisation of the Prakrit original | 2-8-0 |
| 8 The Date of Haribhadra, An Essay in Sanskrit read before the 1st Oriental Conference, Poona by Muni Jinavijaya | 0-4-3 |

पाली-प्राकृत-भाषाजिज्ञासूनां कतिपया अत्युपयोगिग्रन्थाः ।

| | |
|---|---------------|
| अभिधानपदीपिका (पालीशब्दकोष) सपाठक. — मुनि जिनाविजय : | |
| प्रका० मुजरात पुरातत्त्वमंदिर, अमदाबाद. | मूल्यम् ५-०-० |
| पाली पाठावली. सं. मुनि जिनविजय. | ,, ०-१२-० |
| प्राकृत कथासंग्रह | ,, ०-१४-० |
| कुमारपाल प्रतिबोधः (प्राकृतभाषामय सुमहान् बोधप्रद ग्रन्थ) सं० मुनि जिनविजय; 'गायकवाडस् ओरिण्टल सिरीज' नामकग्रन्थमालाया प्रकटीभूत । ,, | ७-८-० |
| त्रीणि छेदसूत्राणि (बृहत्कल्प-व्यवहार-निर्णय-नामानि जैनागमरहस्य भूतानि प्राचीनतराणि सिद्धान्तरत्नानि) | ,, २-८-० |
| मुपासनाहचरियं (प्राकृतभाषाप्रथित सप्तमतीर्थंकरचरितम्—संस्कृतच्छायामन्वित प्राकृतभाषाजिज्ञासूनामनविषकारक ग्रन्थरत्नम्) | ,, ७-८-० |
| सुरमुन्दरीचरियं (प्राकृतपद्यमयी सरसा सरसा सुबोधा कथा) | ,, २-८-० |
| हरिभद्राचार्यसमयनिर्णय (अद्वितीय ऐतिहासिकनिबन्ध) | ,, ०-४-० |
| लेखकः—मुनि जिन विजयः | ,, ०-४-० |

For books apply to—

प्राप्तिस्थानम्—

The Manager, Bharata Jain Vidyalaya.

व्यवस्थापक—भारत जैन विद्यालय,

Poona City. (India)

पूना सीटि (इक्षिण)

